

وَهُوَ الَّذِي يُعَلِّمُ الْوَسْوَاسَ الْغَاسِقَ إِذْ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا يُنَادِيكُمْ إِنَّ الظُّلُمَاتِ لَأَكْبَرُ مِنْ النُّورِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

وَبَرِّئُكُمْ مِمَّا تُشْرِكُونَ
مَا يَدْعُونَ بِهِمُ الْغَيْبَ وَاللَّيْلُ
يَدْعُونَ بِهِمُ الْغَيْبَ وَاللَّيْلُ

© 2023 The Lord's Hema of the Lord's Hema

© 2023 The Lord's Hema of the Lord's Hema

© 2023 The Lord's Hema of the Lord's Hema

The Lord's Hema of the Lord's Hema

The Lord's Hema of the Lord's Hema

The Lord's Hema of the Lord's Hema
www.therhemaofthelord.com

.....	66
..... [3-3] 69	69
..... (7) (22-3:14) 70	70
..... 1:1 74	74
..... 74	74
..... [3-3] 76	76
..... 77	77
..... [3-3] 79	79
..... 82	82
..... 82	82
..... 83	83
..... 83	83
4 84	84
..... (4-4:1) 84	84
..... 84	84
..... 84	84
..... 84	84
..... (4-5) 85	85
..... (7-4:6) 85	85
..... (4:8) 86	86
..... 86	86
..... 90	90
..... 91	91
..... 94	94
..... 98	98
..... (4:8) 103	103
..... (11-4:9) 104	104
..... 105	105
5 106	106
..... (6-5:1) 106	106
..... 106	106
..... 106	106
..... 108	108
..... (14-5:7) 109	109
..... 110	110
..... 110	110
..... 112	112

113 -.....
114 -.....
114
6. וְסֵדֶם.....
115
115
115
119
120
121
122
125
126
127
127
128
134
134
135
136
139
140
141
142
147
148
148
150
152
154
157
158
159
159
159
7. וְסֵדֶם.....
160
160
160
161

..... 162	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر 12،1،000، & 10،000 مَرَوَاتِ وَتَوَاتِي وَتَوَاتِي وَتَوَاتِي
..... 163	اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر 144،000... (اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر)
..... 164	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 166	[فِي 7-ا] 3. اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر (144،000)
..... 167	(فِي 9:7-12) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 167	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 167	(فِي 13:7-15) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 168	(فِي 16:7-17) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ SHERPHERD & LEAD THEM TO LIVE FOUNTAINS OF WATERS (HE SHEPHERD)
..... 169
..... 170	8 وَسْر وَتَوَاتِي
..... 170	(فِي 1:5-8) 7 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 170	- دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 172	[فِي 8-1] دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 173	(فِي 6:8) 7 اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 173	(فِي 7:8) 1 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 173	(فِي 8:8-9) 2 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 173	(فِي 10:8-11) 3 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 174	(فِي 12:8-13) 4 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 174
..... 175	9 وَسْر وَتَوَاتِي
..... 175	(فِي 1:5-9) 5 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 176	(فِي 6:9) دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 176	(فِي 7:9-10) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 176	(فِي 11:9) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 177	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 178	(فِي 12:9) 1 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 178	(فِي 13:9-16) 6 وَسْر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 179	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر 1،000، 10،000، & 10،000 مَرَوَاتِ وَتَوَاتِي
..... 180	- اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 181	(فِي 17:9-19) 3/1 اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 182	(فِي 20:9-21) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 182
..... 183	10 وَسْر وَتَوَاتِي
..... 183	(فِي 1:2-10) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 183	(فِي 3:4-10) 7 اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 183	(فِي 5:6-10) دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 184	(فِي 7:10) دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر
..... 185	(فِي 8:10-11) اَلْمَرْكُزِي دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ SHERPHERD & DEVOUR PROPHECY AGAIN (RECEIVE)
..... 188	<< [فِي 10-1] دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر دَرِ سَرْدَانِ سَر

..... 188	188
..... 188	188
..... 189	189
..... 190	190
..... 191	191
..... 191	191
..... 191	191
..... 193	193
..... 194	194
..... 196	196
..... 196	196
..... 197	197
..... 197	197
..... 198	198
..... 198	198
..... 199	199
..... 199	199
..... 200	200
..... 201	201
..... 202	202
..... 202	202
..... 202	202
..... 204	204
..... 206	206
..... 209	209
..... 209	209
..... 209	209
..... 212	212
..... 217	217
..... 219	219
..... 224	224
..... 225	225
..... 226	226
..... 226	226
..... 230	230
..... 230	230
..... 231	231

660- (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	323
666- (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	323
666- (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	323
666- (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	324
[חֵץ 0-13] וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ וְזָרָהּ	328
[חֵץ 1-13] 7 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	328
[חֵץ 2-13] שְׂדֵה יִשְׂרָאֵל וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ 4 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל (חֵץ 7-8)	330
מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	336
מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	337
אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	338
[חֵץ 3-13] 3 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	339
[חֵץ 4-13] 4 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	345
.....	345
14 חֵץ	346
(וַיִּרְאֵהוּ 5-14:1) 144,000 & (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	346
1 << 1 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ 1 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	346
3 אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ & (אֶחָד מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ)	347
מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	350
מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	351
[חֵץ 14] 14 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	353
(וַיִּרְאֵהוּ 7-14:6) 1 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	354
(וַיִּרְאֵהוּ 14:8) 2 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	354
(וַיִּרְאֵהוּ 11-14:9) 3 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	354
(וַיִּרְאֵהוּ 13-14:12) 13 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	355
.....	355
(וַיִּרְאֵהוּ 16-14:14) 3 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	356
2 << 2 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ 3 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	357
(וַיִּרְאֵהוּ 20-14:17) 20 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	357
.....	359
1,000-.....	359
600-.....	360
.....	361
.....	362
.....	362
15 חֵץ	363
(וַיִּרְאֵהוּ 15:1) 15 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	363
(וַיִּרְאֵהוּ 15:2) 15 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	363
(וַיִּרְאֵהוּ 4-15:3) 4 מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל יָבִיא וְשָׂרָף אֶת־הַמִּזְבֵּחַ	364

..... 382 382
..... 383 383
..... 383 383
..... 383 383
..... 383 383
..... 383 383
..... 385 385
..... 385 385
..... 386 386
..... 386 386
..... 387 387
..... 387 387
..... 388 388
..... 389 389
..... 389 389
..... 390 390
..... 390 390
..... 393 393
..... 393 393
..... 395 395
..... 397 397
..... 398 398
..... 399 399
..... 400 400
..... 400 400
..... 401 401
..... 401 401
..... 402 402
..... 402 402
..... 403 403
..... 403 403
..... 404 404
..... 404 404
..... 407 407

409..... (فیر 19:11) سِدوَعْمَرَى رُبُوْیَسْرَ فِرْمَانِ (فَرَسْرَ اِسْتَدْوِیْیَ اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ) .

409..... (فیر 14-19:12) اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

410..... (فیر 19:15) . اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

410..... (فیر 19:16) اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

410..... اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ (83) .

412..... فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

413..... . اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

413..... [فیر 1-19] اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ .

415..... [فیر 2-19] اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

416..... . فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

417..... . اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

419..... . سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

425..... اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ .

425..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (ع 5-14:1) .

427..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (ع 18-83:11) .

427..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (ع 20-38:19) .

428..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (ع 12:10) .

428..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (ع 5-39:1) .

429..... . رُبُوْیَسْرَ فِرْمَانِ 7 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ (ع 10-39:9) .

429..... . اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ (ع 16-39:11) .

430..... . سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

431..... (فیر 18-19:17) اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ .

431..... (فیر 19:19) فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ ، اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ & سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ .

432..... (فیر 19:20) 1 وِسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ & فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ .

432..... (فیر 19:21) سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ .

434.....

435..... **20 ؤ**

435..... (فیر 20:1) فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ & فَرَسْرَ فِرْمَانِ .

435..... (فیر 3-20:2) اَلَّذِیْ سَرَّ اَلْاَسْرَى فَرَسْرَ (سِدوَعْمَرَى سِرْمَانِ ، اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ) : 1000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ .

435..... . فَرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ سِرْمَانِ 1000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ .

435..... . اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ 1،000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ .

438..... (فیر 20:4) 144،000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ .

439..... <اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ فَرَسْرَ> .

439..... . اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ سِرْمَانِ 1000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ .

442..... (فیر 6-20:5) فَرَسْرَ فِرْمَانِ (4 وِسْرَ فِرْمَانِ 3 وِسْرَ فِرْمَانِ) .

443..... <<3 وِسْرَ فِرْمَانِ 4 وِسْرَ فِرْمَانِ .

443..... (فیر 8-20:7) 1000 اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ .

443..... (فیر 10-20:9) سِدوَعْمَرَى اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ & اِیْرَسْرَ فِرْمَانِ .

The 1st half of Daniel's 70th week		The 2nd half of Daniel's 70th week	
Gentiles's time		The Winter Feasts of the LORD	
The Spring Feasts of the LORD		The Fall Feasts of the LORD	
Tribulation (3.5 years)		Great Tribulation (3.5 years)	
	* AOD	* WOG: The wrath of the Lamb (Rev 6:17), of the Lord God Almighty (Rev 8:1-11:18), of God (Rev 15-16)	
	* Abomination of Desolation	* Wrath of God	
	→1st rapture harvest (Rev 7:4-8)	→2nd rapture harvest (Rev 7:9; 11:14; 14:14; 16:15)	
		→The Wrath of God (The great and dreadful day of the LORD, Mal 4:5; Rev 6:17)	
		→3rd harvest (Rev 20:5-6)	
	AOD	1,000 years (The remnants are in the garden of Eden in the paradise of God)	
		Heavenly Jerusalem	
		The New Jerusalem	
	1 Hour	The hour of temptation	The Holy Jerusalem
	(Rev 1:1-2) The Revelation of Jesus Christ		
	(Rev 1:3) The readers of the logos of prophecy are blessed (The time is at hand)		
	(Rev 1:4) The 7 churches & The 7 Spirits		
	(Rev 1:5) Jesus Christ: The ruler of the kings and the rulers of the ground		
			(Rev 1:6) Jesus Christ (made us kings and priests to God and His Father)
	(Rev 1:7) He comes with clouds		
	(Rev 1:8) The Lord, the Almighty		
	(Rev 1:9) The logos of God, The witness of Jesus Christ		
	(Rev 1:10-11) On the Lord's day (A trumpet, in the Spirit)		
	(Rev 1:12-13) The seven candlesticks		
	(Rev 1:14-15) White hairs of His head, eyes, feet, & voice		
	(Rev 1:16) The seven stars & A sharp two-edged sword		
	(Rev 1:17-18) The first and the last (The keys of hell and of death)		
	(Rev 1:19-20) The revelation of the mystery of the 7 stars (the angels of the 7 churches) & the 7 golden candlesticks (the 7 churches)		
			(Rev 2:1-7) (1) Unto the angel of the church of Ephesus (The tree of life)
			(Rev 2:8-11) (2) Unto the angel of the church of Smyrna (10 days of Tribulation)
			(Rev 2:12-17) (3) Unto the angel of the church of Pergamos (The hidden manna)
			(Rev 2:18-29) (4) Unto the angel of the church in Thyatira (the Great Tribulation)
			(Rev 3:1-6) (5) Unto the angel of the church in Sardis (Name in the Book of Life)
			(Rev 3:7-13) (6) Unto the angel of the church in Philadelphia (A pillar)
			(Rev 3:14-22) (7) Unto the angel of the church of the Laodiceans (Neither cold nor hot)
			(Rev 4:1-4) A door opened in heaven: The Lamb & the 24 elders
			(Rev 4:5) 7 lamps of fire & the 7 Spirits of God
			(Rev 4:6-7) The four (4) living creatures
			(Rev 4:8) The Lord God Almighty (who was, and is, and is to come)
			(Rev 4:9-11) God is worshipped in heaven

The 1st half of Daniel's 70th week		The 2nd half of Daniel's 70th week	
Gentiles's time		The Winter Feasts of the LORD	
The Spring Feasts of the LORD		The Fall Feasts of the LORD	
Tribulation (3.5 years)		Great Tribulation (3.5 years)	
* AOD		* WOG: The wrath of the Lamb (Rev 6:17), of the Lord God Almighty (Rev 8:1-11:18), of God (Rev 15-16)	
* Abomination of Desolation		* Wrath of God	
	→1st rapture harvest (Rev 7:4-8)	→2nd rapture harvest (Rev 7:9; 11:14; 14:14; 16:15)	→3rd harvest (Rev 20:5-6)
	→The Wrath of God (The great and dreadful day of the LORD, Mal 4:5; Rev 6:17)		
Tribulation	AOD	The Great Tribulation	WOG Armageddon The New Jerusalem
	1 Hour	The hour of temptation	1 Hour
Trumpets			The Holy Jerusalem
1st (T)		(Rev 8:6) The 7 angels with the 7 trumpets prepare to sound	
2nd (T)		(Rev 8:7) The 1st angel sounded the trumpet (1/3 of the trees & all green grass burned up)	
3rd (T)		(Rev 8:8-9) The 2nd angel's trumpet sounded (1/3 of the seas, living creatures, & ships destroyed)	
4th (T)		(Rev 8:10-11) The 3rd angel sounded the trumpet (Wormwood fell on a 1/3 of the rivers)	
5th (T)		(Rev 8:12-13) The 4th angel sounded the trumpet (1/3 of the sun, moon, & stars darkened)	
		(Rev 9:1-5) The 5th angel sounded the trumpet (The 1st owe)	
		(Rev 9:6) Death flees from men	
		(Rev 9:7-10) The likeness of the locusts (hurt men for 5 months)	
		(Rev 9:11) The king of the angel of the bottomless pit (Apollyon)	
		(Rev 9:12) The end of the 1st owe	
6th (T)		(Rev 9:13-16) The 6th angel's trumpet sound (The 2nd owe: 4 angels at the great river Euphrates)	
		(Rev 9:17-19) 1/3 of men are killed by the fire, the smoke, & the brimstone	
		(Rev 9:20-21) The rest of the men did not repent of the works of their hands	
		(Rev 10:1-2) A little book (Mighty angel's right foot on the sea & the left foot on the ground)	
		(Rev 10:3-4) Sealed up the things spoken by the 7 thunders	
		(Rev 10:5-6) The angel swore to God (The creator of heaven, the ground, and the sea)	
		(Rev 10:7) The mystery of God fulfilled when the 7th trumpet is about to sound	
		(Rev 10:8-11) The little book (Receive & devour to prophesy again)	
	(Rev 11:1-2) Measure the temple of God		
	(Rev 11:3-4) The Two witnesses		
	(Rev 11:5-6) Two witnesses' authority		
	(Rev 11:7) The beast ascends out of the bottomless pit (kills the 2 witnesses)		
	(Rev 11:8) The dead bodies of the two witnesses		
	(Rev 11:9) The dead bodies of the two witnesses are seen by all for 3 1/2 days		
	(Rev 11:10-13) The resurrection of the 2 witnesses		
	(Rev 11:14) The 2nd owe ends (The mystery of God fulfills when the 7th trumpet is about to sound)		
7th (T)		(Rev 11:15-16) The 7th trumpet sounded (Our Lord & His Christ restore the kingdoms of this world)	
		(Rev 11:17) The Lord God Almighty reigns	
		(Rev 11:18) The wrath of the Lord God Almighty (God) & the reward	
		(Rev 11:19) The temple of God opens (The marriage of the Lamb begins)	

The 1st half of Daniel's 70th week		The 2nd half of Daniel's 70th week	
The Spring Feasts of the LORD	The Fall Feasts of the LORD	The Winter Feasts of the LORD	
Tribulation (3.5 years)	Great Tribulation (3.5 years)	* WOG: The wrath of the Lamb (Rev.6:17), of the Lord God Almighty (Rev.8:1-11:18), of God (Rev.15-16)	
Gentiles's time	* Abomination of Desolation		
Summer Feasts	* Wrath of God		
Tribulation	→ 1st rapture harvest (Rev.7:4-8)		
	→ 2nd rapture harvest (Rev.7:9; 11:14; 14:14; 16:15)		
	→ The Wrath of God (The great and dreadful day of the LORD, Mal.4:5; Rev.6:17)		
	→ 3rd harvest (Rev.20:5-6)		
Tribulation	AOD	The Great Tribulation	1,000 years (The remnants are in the garden of Eden in the paradise of God)
		Armageddon	Heavenly Jerusalem
		WOG	The New Jerusalem
		1 Hour	The Holy Jerusalem
	1 Hour	The hour of temptation	
	(Rev.12:1-2)	A great sign in heaven: The Woman	
	(Rev.12:3)	Another sign appears in heaven (A great red dragon having 7 heads, 10 horns, & 7 diadems)	
	(Rev.12:4-5)	A woman (heavenly Jerusalem) brought forth a male son (The 144,000)	
	(Rev.12:6)	The woman fled into the wilderness to be nourished for 1,260 days	
			(Rev.12:7-9) War in heaven (The great dragon & his angels were cast out from heaven to the ground)
			(Rev.12:10-11) Salvation, power, the kingdom of our God, & the authority of God's Christ have come
	(Rev.12:12-13)	The dragon, who has a short time, persecutes the woman (The wrath of the devil)	
	(Rev.12:14)	The woman is nourished for a time, and times, and half a time	
	(Rev.12:15-16)	The ground swallowed up the flood that was cast out of the dragon's mouth	
	(Rev.12:17-18)	The angry dragon went to make war with the remnant of the woman's seed	
	(Rev.13:1)	The 1st beast out of the sea (7heads, 10 horns, & 10 diadems with a blasphemous name)	
	(Rev.13:2)	The 1st beast out of the sea (a leopard, a bear, & a lion)	
	(Rev.13:3)	One of the 7 heads (the Roman) was slain but was healed (the New Roman Kingdom)	
	(Rev.13:4-7)	The dragon and the 1st beast are worshiped by all who dwell on the ground	
	(Rev.13:8-9)	The 1st beast is worshiped by all who dwell on the ground	
	(Rev.13:10)	The patience and the faith of the holy saints (taken captive & killed)	
	(Rev.13:11)	The 2nd beast out of the ground (has 2 horns like a Lamb)	
	(Rev.13:12-13)	The 2nd beast forces the ground dwellers to worship the 1st beast	
	(Rev.13:14)	The 2nd beast deceives the ground dwellers through the signs	
	(Rev.13:15)	The spirit is given to the image of the beast to speak	
	(Rev.13:16)	The 2nd beast forces the ground dwellers to receive a mark on their right hand or foreheads	
	(Rev.13:17)	No one to buy or sell without the mark, the name of the beast, & the number of his name	
	(Rev.13:18)	666 (Count the number of the beast, who is the number of a man)	

The 1st half of Daniel's 70th week		The 2nd half of Daniel's 70th week	
Gentiles's time		The Winter Feasts of the LORD	
The Spring Feasts of the LORD		The Fall Feasts of the LORD	
Tribulation (3.5 years)		Great Tribulation (3.5 years)	
* AOD		* WOG: The wrath of the Lamb (Rev 6:17); of the Lord God Almighty (Rev 8:1-11:18), of God (Rev 15-16)	
* Abomination of Desolation		* Wrath of God	
	→1st rapture harvest (Rev 7:4-8)	→2nd rapture harvest (Rev 7:9: 11:14; 14:14; 16:15)	→3rd harvest (Rev 20:5-6)
	→The Wrath of God (The great and dreadful day of the LORD, Mal 4:5; Rev 6:17)		
Tribulation	AOD	WOG	1,000 years (The remnants are in the garden of Eden in the paradise of God)
	1 Hour	Amageddon	Hevenly Jerusalem
	The hour of temptation	1 Hour	The New Jerusalem
		(Rev 19:1-2)	The Holy Jerusalem
		(Rev 19:3)	The 1st Alleluia (The 1st Alleluia (Praise: a great multitude in heaven)
		(Rev 19:4-5)	The 2nd Alleluia (Praise: a great multitude in heaven)
		(Rev 19:6)	The 3rd Alleluia (Praise: The 24 elders & the 4 living creatures)
		(Rev 19:7)	The 4th Alleluia (All in heaven: The Lord God Almighty reigns)
		(Rev 19:8)	The marriage of the Lamb has come
		(Rev 19:9)	The Lamb's woman = The righteousness of the holy saints
		(Rev 19:10)	The true logos of God (The marriage supper of the Lamb)
		(Rev 19:11)	The testimony of Jesus (The spirit of prophecy)
		(Rev 19:12-14)	Heaven opened (The one who sat on the white horse)
		(Rev 19:15)	Armageddon (The Logos of God & the armies in heaven)
		(Rev 19:16)	The winepress of the fierceness and wrath of Almighty God
		(Rev 19:17-18)	Armageddon (KING OF KINGS, AND LORD OF LORDS)
			The supper of the great God
		(Rev 19:19)	The beast, the kings of the ground, & their armies make war against God
		(Rev 19:20)	The 1st beast & the false prophet are cast alive into the lake of fire
		(Rev 19:21)	The sword (the rhema) of the Lord Jesus Christ kills the remnant
		(Rev 20:1)	The key to the bottomless pit & A great chain
		(Rev 20:2-3)	The dragon (old serpent, the Devil, Satan): Sealed to the pit for 1,000 years
		(Rev 20:4)	The 144,000 & the Great Tribulation saints to reign for a 1,000 years
		(Rev 20:5-6)	The first resurrection (The 3rd harvest of the 4th watch)
		(Rev 20:7-8)	The 1,000 years finished (Gog and Magog)
		(Rev 20:9-10)	The devil was cast into the lake of fire & brimstone
		(Rev 20:11)	A great white throne
		(Rev 20:12)	2 books opened before God: (1) The Books, (2) the Book of Life
		(Rev 20:13)	The sea and death & hell gave up the dead for their judgement
		(Rev 20:14)	The second death = Death and Hell
		(Rev 20:15)	Whose names are not written in the Book of Life = The lake of fire
		(Rev 21:1)	A New heaven and A New Ground
		(Rev 21:2-3)	New Jerusalem (The Holy City of the temple of the tabernacle of God)
		(Rev 21:4)	The first Adam (former you, will pass away)
		(Rev 21:5-6)	All things are made new (True logos: It is done)
		(Rev 21:7)	The overcomers (The sons of God)
		(Rev 21:8)	The second death

Chapter # of The Book of Revelation

The title of the Bible verses

Chapter 1

The KJV Bible verses with Strong's definitions

(Rev 1:1-2) The Revelation of Jesus Christ

Rev 1:1² The Revelation (*apokalypsis*)^{G602} of Jesus Christ, which God gave unto him, to shew unto his servants^{G1401} things which must shortly come to pass; and he sent and signified it by his angel unto his servant John:
 Rev 1:2 Who bare record (bare witness)^{G3141} of the word (the logos)^{G3056} of God, and of the testimony (witness)^{G3141} of Jesus Christ, and of all things that he saw.

Rev 1:1³ **The Revelation of Jesus Christ**, which **God** gave unto him, to shew unto his **servants** things which must shortly come to pass; and he sent and signified it by his angel unto his servant **John**.
 Rev 1:2 Who bare witness of **the logos of God**, and of **the witness of Jesus Christ**, and of **all things** that he saw.
 • **God** → gave (The Revelation of Jesus Christ) → to (**Jesus Christ**) → His **angel** (of **Jesus Christ**) was sent to **John**.

The KJV Bible verses are retranslated using Strong's definitions

Description of the Bible verses

Strong's Greek (G) or Hebrew (H) Lexicon

More in-depth description of the scriptures

† A sharp two-edged sword of His mouth is a flaming sword that turned every way to keep the way of the tree of life, which yields the fruit of the hidden manna or **the rhema of the Lord** (Gen 3:24, 1Pe 1:25)²³
 † **The LORD God** placed Cherubims and a flaming sword^{H2719} at the east of the garden of Eden when He drove out the man. The flaming sword^{H2719} turned every way to keep the way of the tree of life (Gen 3:24). Therefore, the two-edged sword^{H2719} of the gospel is the flaming sword which is held in the hand of the holy saints with the high praises of God (א) ^{H410} in their mouth (*Psa 149:6 Let the high praises of God (א) ^{H410} be in their (the holy saints) mouth, and a two-edged sword^{H2719} in their hand;*).²³

The footnote separator line

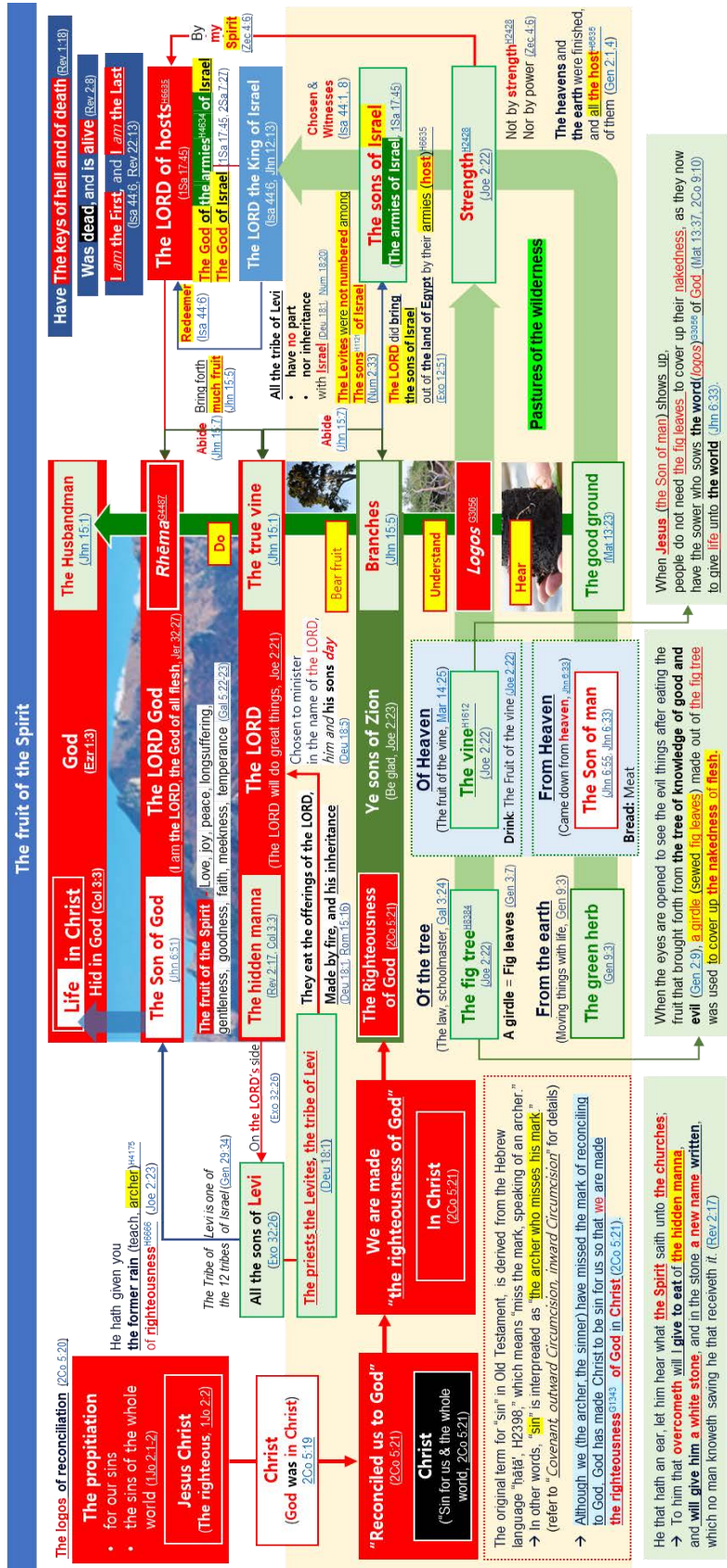
Ibid: Identical in the preceding footnote

Foot note #

Page #

²² Ibid. ←
²³ Video 23. "The bread, The manna, & The hidden manna." ←
www.therhemaofthelord.com/the-bread/23-the-bread-the-manna-the-hidden-manna/. ←

- [39] سَوِيَّوَسَرِ اَلْمَعْرُوفِي وَتَرْسَرِ وَايُو فَايُو مَعْرُوفِي، مَعْرُوفِ اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي & مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [40] [مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي] 4. مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [41] مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [42] [مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي] 5. مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [43] (مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي) مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [44] مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي & مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي (2 مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي & 1 & 3)
- [45] [مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي] 6. مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [46] مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [47] [مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي] 7. مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [48] [مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي] 8. مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي
- [49] سَوِيَّوَسَرِ اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي (مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي 1# مَعْرُوفِي اَلْمَعْرُوفِي 48# اَلْمَعْرُوفِي)



פְּרָק 7 (7 תְּהִלָּה לַיהוָה) & 7 עֲשֵׂה נִסְיָנוֹת וְשִׁפְטֵנוֹ (7 תְּהִלָּה לַיהוָה) יְסֻמְרוּ.

פְּרָק 1:19 וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, כִּי יִבְרָךְ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
פְּרָק 1:20 אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, עֲשֵׂה נִסְיָנוֹת וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם:
אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם.

פְּרָק 1:19 וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, כִּי יִבְרָךְ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
פְּרָק 1:20 אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם (7) עֲשֵׂה נִסְיָנוֹת וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ (7) עֲשֵׂה נִסְיָנוֹת וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.

+ וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, כִּי יִבְרָךְ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם... וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם.
לְשִׁפְטֵנוֹתָּם וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם, אֲרֻמְסֵי אֱלֹהֵינוּ... וְשִׁפְטֵנוֹתָּם לְשִׁפְטֵנוֹתָּם.⁴³

The Communion

Jesus' teaching: Meat & Drink (A hard logos)

- You eat the **meat** of the Son of man
- You drink **His Blood**

The fruit of the vine from the ground (Mat.26:29)
Eat my Flesh (The body of the Lord Jesus)
Drink my Blood (The new testament)

Take, eat, this is my body (Mat.26:27)
 This is my body (Mat.14:22)
 which is given for you (Luk.22:19)

Drink ye all of it (Mat.26:27)
Cup of the Lord (1Co.11:27)
 Shed for many (Luk.22:20)
 The remission of sins (Luk.22:20)

Life & Godliness (2Pe.1:3, 16) → **Brotherly kindness** (2Pe.1:7) → **Love** (2Pe.1:7)

Patience (2Pe.1:6, 10, 13)
Kindness (Rom.6:25)

The Seed of David
 Hereby know ye the Spirit of God: Every spirit that confesseth that Jesus Christ is come in the flesh is of God (1Jo.4:2)
 For David himself said by the Holy Ghost: The LORD said to my Lord: Sit thou on my right hand, till I make thine enemies thy footstool (Mat.12:38)

Our Lord Jesus Christ (Lack this knowledge = Blind)
 Made of the seed of David according to the flesh (Rom.1:3, 2Pe.1:8)

Temperance (2Pe.1:9)
 For as often as ye eat this bread, and drink this cup, preach the Lord's death to whosoever until He come (1Co.11:26)

Mary Magdalene came and told the disciples that she had seen the Lord, and that he had spoken these things unto her (Luk.20:18)

The knowledge of him that hath called us to glory and **virtue** (2Pe.1:3-5)

The good seed (The sons of the kingdom) sown multiply your seed sown in you (2Co.3:10)

The fruits of your righteousness increase of your righteousness (2Co.3:10)

Christ (One seed) Christ died for our sins according to the scriptures; And that he was buried, and that he rose again the third day (Gal.3:16)

Christ be in you, the body is dead because of sin, but the Spirit is life because of righteousness (Rom.8:10)

Spirit (Luk.7:39) He that believeth on me as the scripture hath said, out of his belly shall flow rivers of living water. But this spake he of the Spirit (Joh.7:39)

Christ (One seed) Jesus Christ of the seed (sperma) of David was raised from the dead (2Ti.2:8)

The Son of man sowed the word (Logos) (Joh.4:14)

Flesh of the Son of man which is **The Living Bread** (Joh.6:51)

Meat (Flesh) which is **Drink** (Blood) (Joh.6:55)

The will of God My flesh given for the life of the world (Joh.6:51)

God ministereth **Seed** (In Isaac) to **The Son of man** sowed the word (Logos) (Joh.4:14)

Flesh of the Son of man which is **The Living Bread** (Joh.6:51)

Meat (Flesh) which is **Drink** (Blood) (Joh.6:55)

The will of God My flesh given for the life of the world (Joh.6:51)

Blessed is he that shall eat bread in the kingdom of God I will drink no more of the fruit of the vine (Logos), until that day when I drink it new (rhema) with you in the kingdom of God (Luk.14:25, Luk.14:15)

The Lord's prayer
 Mat.6:11 Give us this day our daily bread.

The kingdom of God
 Whosoever shall confess that I will raise (you) up at the last day Jesus is the Son of God, God dwelleth in him, and he in God (1Jo.4:15)

The word (rhema) (Mat.4:4, Joh.15:7)
 The word (Logos) (Joh.1:14)
 I will raise (you) up at the last day Jesus = Son of God (Joh.4:19)

The communion of the body of Christ
 The communion of the body of Christ (1Co.10:16, 1Co.11:26)

Do this in remembrance of me (Luk.22:19, 1Co.11:24-26)

Be partakers of the Lord's table (Luk.22:29, 1Co.10:21)

My Flesh (Eat) (Joh.6:55-56)
My Blood (Drink) (Joh.6:55-56)
The Bread of the Lord Jesus (1Co.11:24)
The Cup of the Lord (1Co.11:25)

Not guilty of the Blood of the Lord (1Co.11:27)

Broken for you (1Co.11:24)

Eternal Life (Joh.6:54, not seen 2Co.4:18, sow to the Spirit = Reap Eternal Life, Gal.6:9)

The Living Water (Joh.4:10)
 He that believeth on me
 He that believeth on me as the scripture hath said, out of his belly shall flow rivers of living water. But this spake he of the Spirit (Joh.7:39)

The Living Bread (Joh.6:51)
 Came down from heaven

Meat (Flesh) which is **Drink** (Blood) (Joh.6:55)

Jesus = Son of man (Joh.6:42, 6:53)

Never Hunger (Joh.6:53)
Never Thirst (Joh.6:53)
Believe (Joh.6:53)
Speak (Joh.6:53)

Life (Joh.6:42)
 My flesh given for the life of the world (Joh.6:51)

The root word of bread is at root, which means to rise from the ground. Thus, the bread of God, which cometh down from heaven, also raises from the ground.

preaching peace by Jesus Christ (he is Lord of all) (Act.10:36)

→ **קריאת ירו** היא קריאת **שתי ירו**... **אלה**, אפי' קריאת ירו
 למען קריאת ירו... **קריאת ירו**, **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...
 י קריאת... **אלה**... **קריאת ירו**...⁶³

† קריאת ירו וקריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...
 קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... (13:11).

(2) **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

• **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

- **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...⁶⁴

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...⁶⁵

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**...

• **קריאת ירו**...

- **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...⁶⁶

• **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

- **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...⁶⁵

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...⁶⁶

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

קריאת ירו... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**...

⁶³ **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... (22:14) **קריאת ירו**...⁶³

⁶⁴ **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... (1:13) **קריאת ירו**...⁶⁴

www.therhemaofthelord.com/קריאת-ירושלם/16

⁶⁵ **קריאת ירו**...⁶⁵

⁶⁶ **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... **קריאת ירו**... (13:42) **קריאת ירו**...⁶⁶

www.therhemaofthelord.com/קריאת-ירושלם/15

(אַרְזִלְזָרְוּ 13:46), סֵדְרֵי תּוֹרַת אֲדָמָה בְּיַד מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּיַד עַמּוּד הַבַּיִת, אִתְּרַיְתָא רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ
(אַרְזִלְזָרְוּ 13:46-47).

אַרְזִלְזָרְוּ חֵרְטֵם וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ (וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי רַחֲמָנֵינוּ)
אַרְזִלְזָרְוּ שֶׁרְחֵם אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ
וְאַרְזִלְזָרְוּ (1:8).⁷⁴

חֲרָטֵם 11:25 אֲרִיזְרַתְנוּ.

חֲרָטֵם אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ
אֲרִי, חֲרָטֵם אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ אֲרִיזְרַתְנוּ.

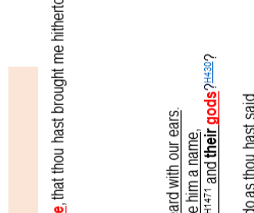
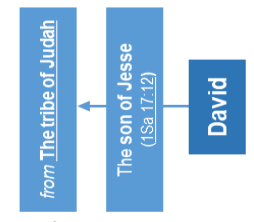
חֲרָטֵם 11:26 אֲרִיזְרַתְנוּ חֲרָטֵם אֲרִיזְרַתְנוּ.

סֵדְרֵי תּוֹרַת אֲדָמָה בְּיַד מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּיַד עַמּוּד הַבַּיִת, אִתְּרַיְתָא רַחֲמָנֵינוּ וְזֵי אֲבוּיָא רַחֲמָנֵינוּ

⁷⁴[3] תְּרַמְתּוּן 70 רַחֲמָנֵינוּ אֲרִיזְרַתְנוּ "אֲרִיזְרַתְנוּ (16-19:15) אֲרִיזְרַתְנוּ (חֲרָטֵם אֲדָמָה בְּיַד מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן):".

Abraham → Isaac → Jacob → Judas → Phares → Esrom → Aram → Aminadab → Naason → Salmon → Boaz → Obed → Jesse → David (14 generations)

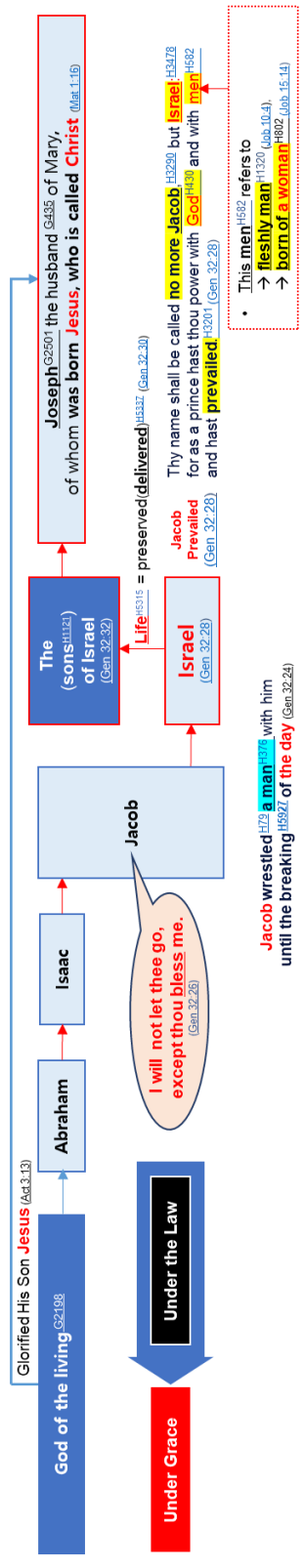
The LORD told David that he will set up David's seed which shall proceed (bring forth) out of thy bowels, and I will establish the throne of his kingdom forever. And thy house and thy kingdom shall be established for ever.



David's answer: The house of David for a great while to come for Israel. Who am I, O Lord? and what is my house, that thou hast brought me hitherto?

2Sa 7:18 Then went king David in, and sat before the LORD, and he said, Who am I, O Lord? and what is my house, that thou hast brought me hitherto? 2Sa 7:19 And this was yet a small thing in thy sight, O Lord, and I have said, Who am I, O Lord? and what is my house, that thou hast brought me hitherto? And is this the manner of man, O Lord? And what can David say more unto thee? for thou, O Lord, knowest thy servant. 2Sa 7:20 And let thy name be magnified for ever, saying, The LORD of hosts is the God over Israel, and let the house of thy servant David be established before thee. 2Sa 7:21 For thy words' sake, and according to thine own heart, hast thou done all these great things, to make thy servant know them. 2Sa 7:22 Wherefore thou art great, O LORD, our God, for there is none like thee, neither is there any God beside thee, according to all that we have heard with our ears. 2Sa 7:23 And what one nation in the earth is like thy people, even like Israel, whom God went to redeem for a people to himself, and to make him a name, and to do for you great things and terrible, for thy land, before thy people, which thou redeemedst from Egypt, and their gods? And thou hast confirmed to thyself thy people Israel to be a people unto thee for ever, and thou, LORD, art become their God. And now, O LORD, our God, the word that thou hast spoken concerning thy servant, and concerning his house, establish it for ever, and do as thou hast said. 2Sa 7:25 And let thy name be magnified for ever, saying, The LORD of hosts is the God over Israel, and let the house of thy servant David be established before thee. 2Sa 7:26 For thou, O LORD, our God, hast revealed to thy servant, saying, I will build thee an house, therefore hath thy servant found in his heart to pray this prayer unto thee. 2Sa 7:28 And now, O Lord, our God, name of the supreme God amongst the Hebrews, thou art that God, and thy words be true, and thou hast promised this goodness unto thy servant: therefore now let it please thee to bless the house of thy servant, that it may continue for ever before thee. 2Sa 7:29 Therefore now let it please thee to bless the house of thy servant, that it may continue for ever before thee. Therefore now let it please thee to bless the house of thy servant, that it may continue for ever before thee.

Israel & The sons of Israel
 [One nation of Israel - The 12 sons of Jacob / the 12 Tribes of Israel] Reuben → Simeon → Levi → Judah → Dan → Naphtali → Gad → Asher → Issachar → Zebulun → Joseph → Benjamin.



Jacob wrestled with a man until the breaking of the day. In Gen 32:24, Jacob wrestled with a man, whom he refers to as 'God', and men (flesh) means Jacob's life in his flesh is delivered to his Soul. The meaning 'prevailed' is 'to endure to overcome'. In other words, he beseeched God to deliver him from being governed by the lesser light (under grace), the source of which is God. Let there be light. Jacob would have died if he had seen God face-to-face while ruled by the lesser light, but his life is preserved because he overcame to be ruled by the greater light (under the light of God, or under God's grace).

The Lord's Passover (The disciples vs The apostles)

The Lord's Passover (to the 12 apostles) vs. the disciples

The 12 apostles

Luk 22:14 And when the hour was come, he sat down, and Jesus with him. Luk 22:15 And he said unto them, With desire I have desired to eat this passover with you before I suffer.
 Luk 22:16 For I say unto you, I will not any more eat thereof, until it be fulfilled in the kingdom of God. Luk 22:17 And he took the cup, and gave thanks, and said, Take this, and divide it among yourselves.
 Luk 22:18 For I say unto you, I will not drink of the fruit of the vine, until the kingdom of God shall come.
 → When the hour came, Jesus sat down with the 12 apostles to eat the Passover before He suffer. Then Jesus took the cup and gave the apostles to divide it among themselves and says that He will not drink the fruit of the vine until the kingdom of God comes.
 → Note that Jesus took the cup of the fruit of the vine and said that He will not drink of it until the kingdom of God shall come.
 → Refer to "4. Pentecost" for details

The disciples

The Bread to the disciples

Mat 26:26 And as they were eating, Jesus took bread, and gave thanks, and brake it, and gave it to the disciples, and said, Take, eat; this is my body.
 Mar 14:22 And as they were eating, Jesus took bread, and blessed it, and brake it, and gave it to the disciples, and said, Take, eat; this is my body.
 → Note that the apostles, the cup to divide among themselves, but Jesus gave the disciples the bread (which is His body broken for them, 1Co 11:24).

The out to the disciples

Mar 26:27 And he took the cup, and gave thanks, and gave it to them, saying, Drink ye all of it.
 Mar 14:23 And he took the cup, and when he had given thanks he gave it to them, and they all drank of it.
 Mar 14:24 And he said unto them, This is my blood of the new testament, which is shed for many.
 Mar 26:28 For this is my blood of the new testament, which is shed for many for the remission of sins.
 Mar 14:24 And he said unto them, This is my blood of the new testament, which is shed for many.
 → The cup that the apostles divided is the blood of the new testament, which is shed for many for the remission of sins.
 Mar 26:29 But I say unto you, I will not drink henceforth of this fruit of the vine, until that day when I drink it new with you in my Father's kingdom.
 Mar 14:25 Yeny! I say unto you, I will drink no more of the fruit of the vine, until that day.
 → He will no more drink the fruit of the vine, for He will drink new with you in His Father's kingdom, in God's kingdom.
 Mar 26:30 And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives.
 Mar 14:26 And when they had sung an hymn, they went out into the mount of Olives.
 → Following the Passover, the disciples sang an hymn and went out into the mount of Olives.

The Lord Jesus

1Co 11:23 For I have received of the Lord that which also I delivered unto you, That the Lord Jesus the same night in which he was betrayed took bread:
 1Co 11:24 And when he had given thanks, he brake it, and said, Take, eat; this is my body, which is broken for you; this do in remembrance of me.
 1Co 11:25 After the same manner also he took the cup, when he had supped, saying, This cup is the new testament in my blood.
 → this do ye, as oft as ye drink it, in remembrance of me.
 1Co 11:26 For as often as ye eat this bread, and drink this cup, ye do shew (re-ach) the Lord's death till he come.
 1Co 11:27 Wherefore whosoever shall eat this bread, and drink this cup of the Lord unworthily, shall be guilty of the body and blood of the Lord.
 1Co 11:28 But let a man examine himself, and so let him eat of that bread, and drink of that cup.
 1Co 11:29 For he that eateth and drinketh unworthily, eateth and drinketh damnation to himself; not discerning the Lord's body.
 1Co 11:30 For this cause many are weak and sickly among you, and many sleep.
 1Co 11:31 For if we would judge ourselves, we should not be judged.
 1Co 11:32 But when we are judged, we are chastened of the Lord, that we should not be condemned with the world.
 1Co 11:33 Wherefore, my brethren, when ye come together to eat, tarry one for another.
 1Co 11:34 And if any man hunger, let him eat at home, that ye come not together unto condemnation. And the next will I set in order when I come.
 → It was the Lord Jesus who was betrayed and took bread at the Lord's Passover.

The Lord's prayer

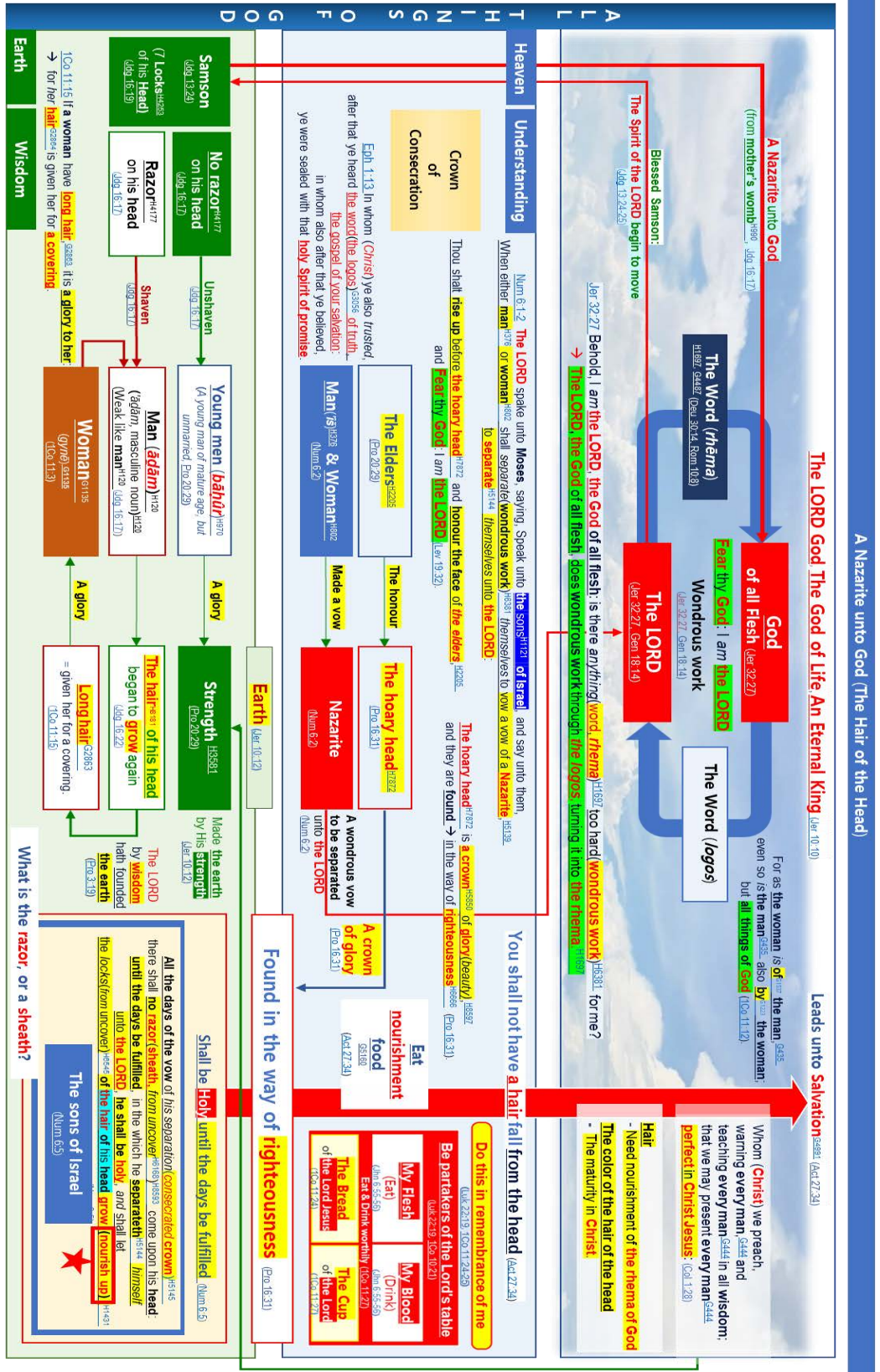
Mat 6:13 And lead us not into temptation, but deliver us from evil.

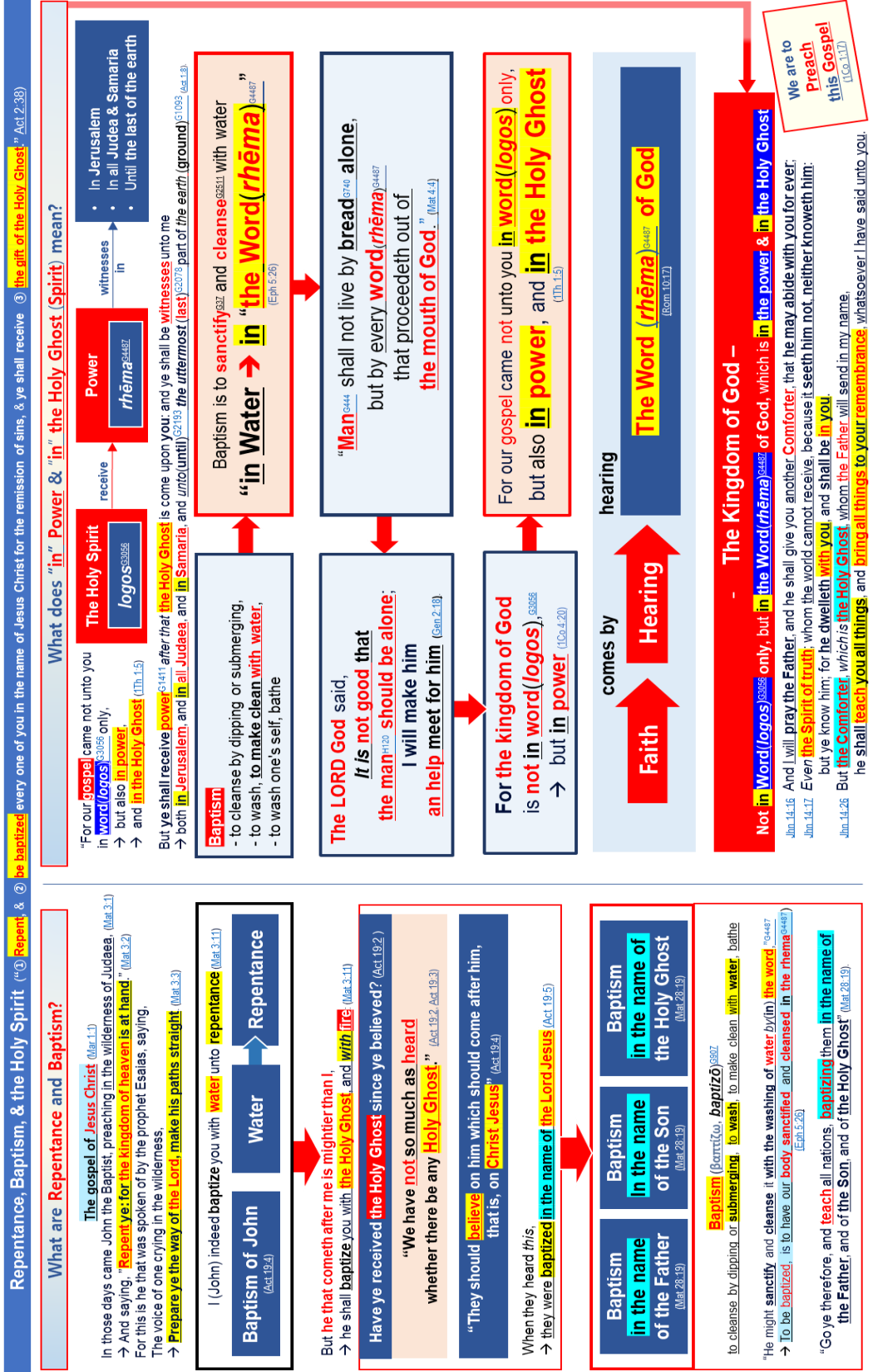
The apostles

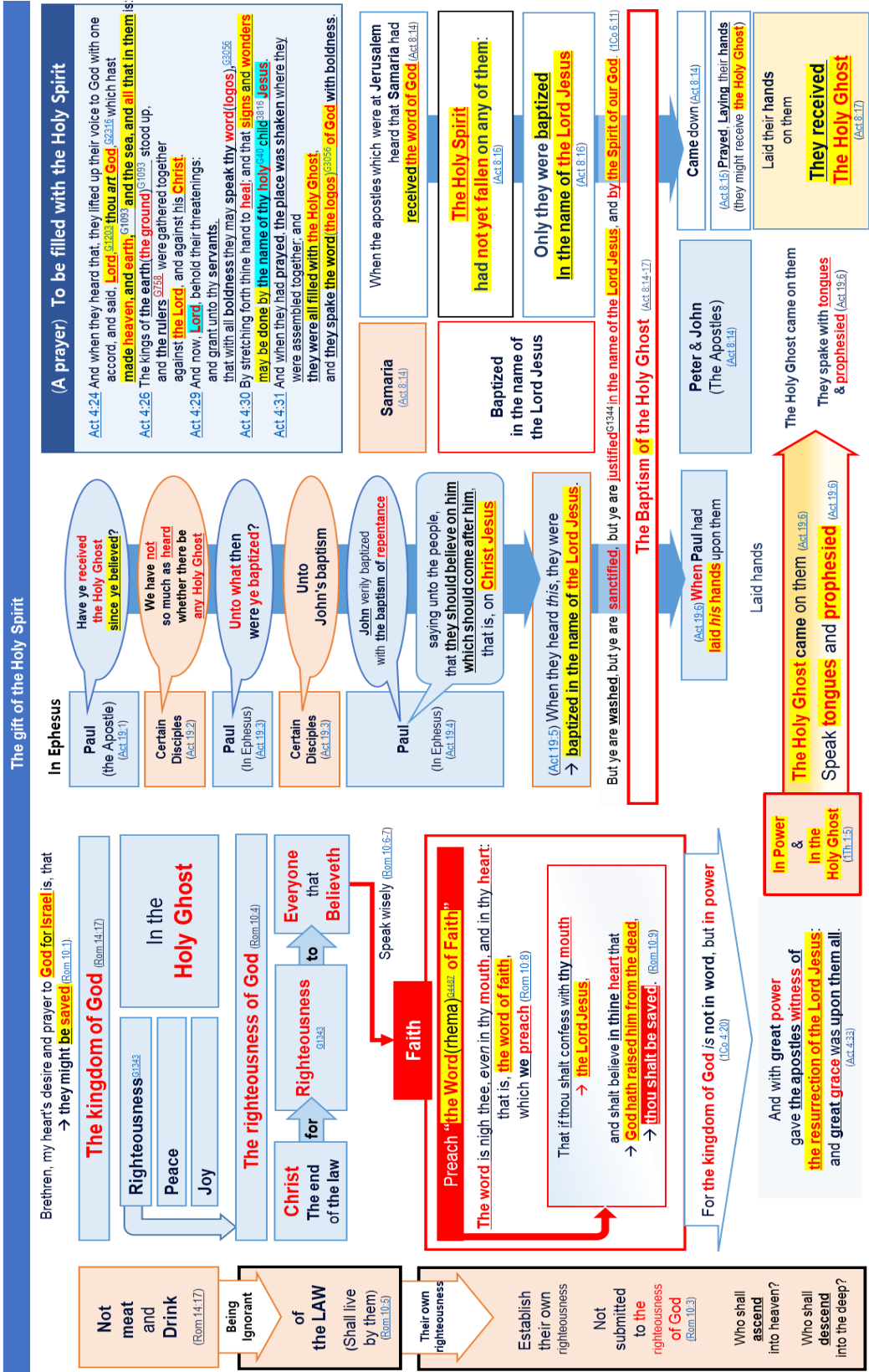
The bread to the apostles
 Luk 22:19 And he took bread, and gave thanks, and brake it, and gave unto them, saying, This is my body which is given for you; this do in remembrance of me.
 → To the apostles, Jesus says that the bread is His broken body given for "you," and they are to do in remembrance of Him.
The cup to the apostles
 Luk 22:20 Likewise also the cup after supper, saying, This cup is the new testament in my blood, which is shed for you.
 → To the apostles, Jesus says that the cup is the new testament in His blood, which is shed for you.
 Luk 22:21 But, behold, the hand of him that betrayeth me is with me on the table.
 Luk 22:22 And truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed!
 Luk 22:23 And they began to enquire among themselves, which of them it was that should do this thing.
 Luk 22:24 And there was also a strife among them, which of them should be accounted the greatest.
 Luk 22:25 And he said unto them, The kings of the Gentiles exercise lordship over them; and they that exercise authority upon them are called benefactors.
 Luk 22:26 But ye shall not be so; but he that is greatest among you, let him be as the younger (newborn), and he that is chief, as he that doth serve.
 Luk 22:27 For whether is greater, he that sitteth at meat, or he that serveth? Is not he that sitteth at meat? but I am among you as he that serveth.
 Luk 22:28 Ye are they which have continued with me in my temptations.
 Luk 22:29 And I appoint unto you a kingdom, as my Father hath appointed unto me.
 Luk 22:30 That ye may eat and drink at my table in my kingdom, and sit on thrones, judging the twelve tribes of Israel.
 → The hand of the enemy that betrays Jesus is with Him on the table.
 → The apostles continued with Jesus in His temptations; therefore, Jesus appoints a kingdom to the apostles, just as His Father appointed a kingdom to Him.
 → Likewise, the chief among the apostles is the one who serves, just as Jesus is among them to serve.
Jesus is called to be the Lord following the Passover:
 Luk 22:31 And the Lord said, Simon, Simon, behold, Satan hath desired to have you, that he may sift you as wheat.
 Luk 22:32 But I have prayed for thee, that thy faith fail not, and when thou art converted (turn), strengthen thy brethren.
 Luk 22:33 And he said unto him, Lord, I am ready to go with thee, both into prison, and to death.
 Luk 22:34 And he said, I tell thee, Peter, the cock shall not crow this day, before that thou shalt thrice deny that thou knowest me.
 → Following the Passover, Jesus is called to be the Lord and He prayed for Peter's faith knowing that Peter will deny Him three times.

The Lord Jesus

This do in remembrance of me
 → This is my body, which is broken for you; this do in remembrance of me (1Co 11:24)
 → This is the body of the Lord Jesus
This cup is the new testament in my blood
 → this do ye, as oft as ye drink it, in remembrance of me (1Co 11:25)
 → This is the new testament in my blood of the Lord Jesus
 → This is the same passage from the gospel of Luke ("This cup is the new testament in my blood," Luk 22:20)
 → Therefore, the author of the first epistle to the Corinthians (from 1Co 11:23 to 1Co 11:34) is also the apostle, or Paul who was a servant of Jesus Christ, called to be an apostle, separated unto the gospel of God, (Luk 22:29, Rom 1:1).
 Act 8:19 (For as yet he (the Holy Ghost) was fallen upon none of them: only they were baptized in the name of the Lord Jesus.)
 Jm 7:39 for the Holy Ghost was not yet given; because that Jesus was not yet glorified.)
 → For the Lord Jesus will not eat and drink until God's kingdom come, the Holy Spirit has not yet been given in His name





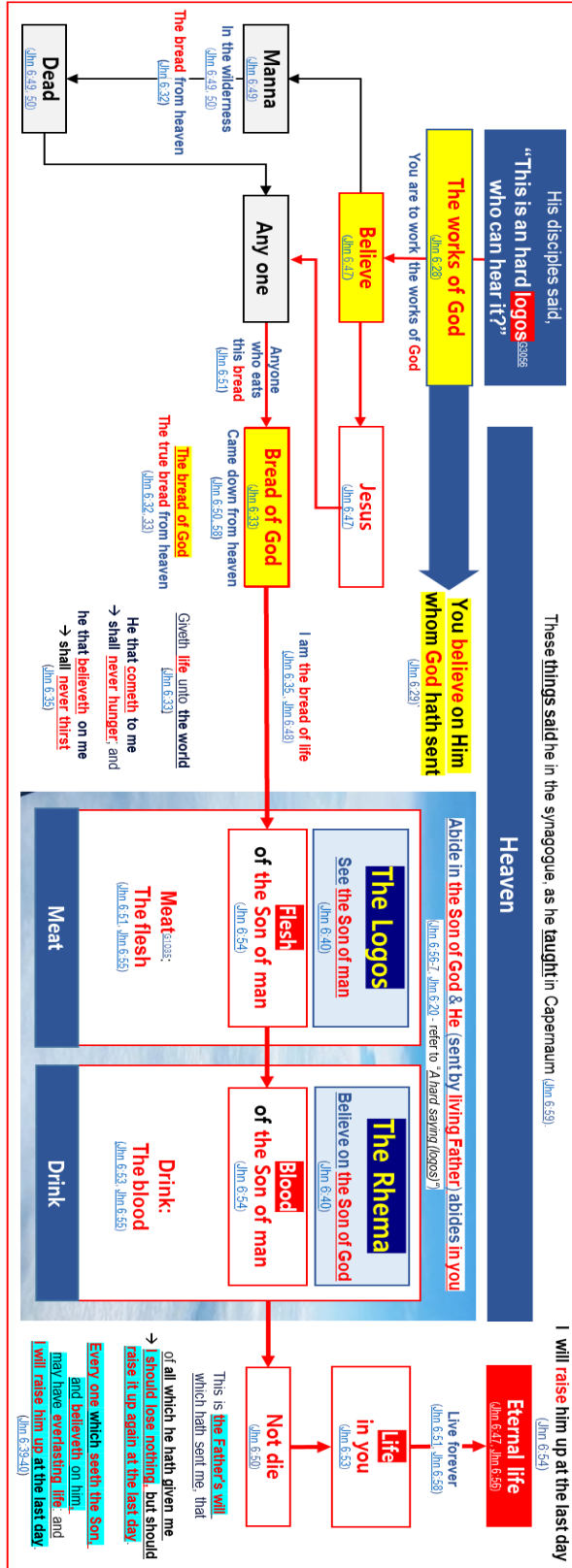


111 رَفْعُ عَرْشِي زَكْرِيَّا 14. "عَرْشِي زَكْرِيَّا، رَفْعُ عَرْشِي زَكْرِيَّا، رَفْعُ عَرْشِي زَكْرِيَّا."

A hard sayings (The logos) & The works of God 2/2

Eat my flesh & drink my blood
 John 6:47 Verily, verily, I say unto you, He that believeth on me hath everlasting (eternal) life.
 John 6:48 **Sanctified bread** of the
 John 6:49 Your fathers did eat manna in the wilderness, and are dead.
 John 6:50 This is the bread which came down from heaven, that a man may eat thereof and not die.
 John 6:51 **Sanctified bread** of the living Father, which I will give for the life of the world.
 John 6:52 The Jews therefore strove among themselves, saying, How can this man give us his flesh to eat?
 John 6:53 **Except ye eat the flesh** of the Son of man, and drink his blood, ye have no life in you.
 John 6:54 Whoso eateth my flesh, and drinketh my blood, shall have eternal life, and I will raise him up at the last day.
 John 6:55 For my flesh is meat indeed, and my blood is drink indeed.
 John 6:56 He that eateth my flesh, and drinketh my blood, shall dwell in me, and I in him.
 John 6:57 As the living Father hath sent me, and I live by the Father, so he that eateth me, even he shall live by me.
 John 6:58 This is that bread which came down from heaven, not as your fathers did eat manna, and are dead: **he that eateth of this bread shall live for ever.**
 John 6:59 These things said he in the synagogue, as he taught in Capernaum.
 John 6:60 Many therefore of his disciples, when they had heard this, said, This is a hard saying, who can hear it?
 John 6:61 When Jesus knew in himself that his disciples murmured at it, he said unto them, Doth this offend you?
 John 6:62 What and if ye shall see the Son of man ascend up where he was before?
 John 6:63 It is the spirit that quickeneth; the flesh profiteth nothing: **but the words (logos) that speak unto you, they are spirit, and they are life.**

How can we work the works of God?
 John 6:28 Then said they unto him, What shall we do that we might work the works of God?
 John 6:29 Jesus answered and said unto them, **This is the work of God, that ye believe on him whom he hath sent.**
 John 6:30 They said therefore unto him, What sign shewest thou then, that we may see, and believe thee? what dost thou work?
 John 6:31 Our fathers did eat manna in the desert, as it is written, He gave them bread from heaven to eat.
 John 6:32 Then Jesus said unto them, Verily, verily, I say unto you, **Moses gave you not that bread from heaven; but my Father giveth you the true bread from heaven.**
 John 6:33 For the bread of God, is he which cometh down from heaven, and giveth life unto the world.
 John 6:34 Then said they unto him, Lord, evermore give us this bread.
 John 6:35 And Jesus said unto them, **I am the bread of life.**
 John 6:36 **But I said unto you, That ye also have seen me, and believe not.**
 John 6:37 All that the Father giveth me shall come to me, and him that cometh to me I will in no wise cast out.
 John 6:38 For I came down from heaven, not to do mine own will, but the will of him that sent me.
 John 6:39 And this is the Father's will, which hath sent me, **that of all which he hath given me I should lose nothing, but should raise it up again at the last day.**
 John 6:40 And this is the will of him that sent me, that **every one which seeth the Son, and believeth on him, may have everlasting life, and I will raise him up at the last day.**
 John 6:41 **We work the works of God by believing on the Son of man and abiding in the Son of God whom God has sent, and be raised up at the last day.**



120 عَرَبِيَّةٌ 25. "سُرِّيَّةُ لُغَاةِ (The logos) & دَوْرُ سُرِّيَّةِ رَدِّ رُؤْيَا (2/2)."

The Lord's Passover (The New Testament)

God multiplies your seed sown, and increases the fruits of your righteousness

2Co.9:10 Now he (God) that ministereth seed⁶⁴⁵⁹ to the sower⁶⁴⁶⁷ both ministereth bread⁶⁷⁴⁰ for your food (meat)⁶⁴²⁵ and multiply your **seed**⁶⁴⁷⁰ of God, **and increase the fruits of your righteousness** ()

• Seed⁶⁴⁷⁰ (sporos, masculine noun) = **The seed** (masculine noun) = **logos of God**. (Now the parable is this: **The seed**⁶⁴⁷⁰ is the **word** (the logos)⁶⁵⁰⁶ of God. **Luk.8:11**)

• Seed⁶⁴⁵⁹ (sperma, neuter noun) = **The word** (rhema, neuter noun)⁶⁴⁸⁷; **The seed**⁶⁴⁵⁹ refers to the **rhema** of the same neuter noun, which is the same as the seed in Isaac. (In Isaac shall thy seed⁶⁴⁵⁹ be called. Rom.9:7)

• The sower⁶⁴⁶⁷: **The Son of man** (He that soweth)⁶⁴⁸⁷; the good seed⁶⁴⁸⁷ is the **Son of man**. (Mat.13:37)

The seed of God = Jesus → Bread⁶⁷⁴⁰ = **Flesh** → **Christ** → **Seed**⁶⁴⁷⁰ = **Logos** = **Christ**

Jhn.6:51 I am the living bread⁶⁷⁴⁰ which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever, and **the bread**⁶⁷⁴⁰ that I will give is my **flesh**⁶⁴⁵¹

Jhn.6:51 I am the living bread⁶⁷⁴⁰ which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever, and **the bread**⁶⁷⁴⁰ that I will give is my **flesh**⁶⁴⁵¹

Jhn.6:51 I am the living bread⁶⁷⁴⁰ which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever, and **the bread**⁶⁷⁴⁰ that I will give is my **flesh**⁶⁴⁵¹

Jhn.6:51 I am the living bread⁶⁷⁴⁰ which came down from heaven: if any man eat of this bread, he shall live for ever, and **the bread**⁶⁷⁴⁰ that I will give is my **flesh**⁶⁴⁵¹

→ **The bread is the flesh of the Son of man, who was the logos, and is the seed.**

→ To have life, you need to eat His flesh (the spiritual meat, 1Co.10:3) and drink His blood (the spiritual drink, 1Co.10:4).

The seed of promise = Christ → **Seed**⁶⁴⁷⁰ = **Rhema**⁶⁴⁶⁰

Gal.3:16 Now to Abraham and his seed⁶⁴⁶⁰ were the promises made. He saith not, And to seeds, as of many; but as of one. And to thy seed⁶⁴⁶⁰ which is **Christ**

Rom.9:7 Neither, because they are the seed of Abraham, are they all children⁶⁵⁰⁴; but, in Isaac shall thy seed⁶⁴⁶⁰ be called.

Mat.4:4 Man shall not live by bread (logos)⁶⁷⁴⁰ alone, but by every word (rhema)⁶⁴⁸⁷ that proceedeth out of the mouth of God

→ Mat.4:4 is reinterpreted as follows: "Man shall not live by logos alone, but by every rhema that proceedeth out of the mouth of God"

The children of promise

Mat.13:38 The field is the world⁶⁴⁸⁴; the good seed are the children (the sons)⁶⁵⁰⁷ of the kingdom; but the tares are the children (the sons)⁶⁵⁰⁷ of the wicked one

Gal.4:28 Now we, brethren, as Isaac was, are the children⁶⁵⁰⁴ of promise.

Rom.9:8 That is, They which are the children⁶⁵⁰⁴ of the flesh, these are not the children⁶⁵⁰⁴ of God; but the children⁶⁵⁰⁴ of the promise are counted for the seed⁶⁴⁵⁹

→ **The Son of man gives His flesh for the life of the world (Jhn.6:51) and sows the children⁶⁵⁰⁴ of promise in the kingdom of heaven (Mat.13:24)**

2Co.9:10 Now he (God) that ministereth seed⁶⁴⁵⁹ to the sower⁶⁴⁶⁷ (the Son of man)⁶⁴⁸⁷, both ministereth bread⁶⁷⁴⁰ for your food (meat)⁶⁴²⁵

→ God ministers the seed of Christ (or the rhema)⁶⁴⁸⁷ to the Son of man to sow the children⁶⁵⁰⁴ of promise in the kingdom of heaven.

God also ministers nourishing bread (logos) for your meat, which is the flesh of the Son of man (Jhn.6:53).

2Co.9:10 and multiply your seed⁶⁴⁷⁰ sown, and increase the fruits of your righteousness.)

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

→ and multiply the logos of God sown in you, and increase the fruits of your righteousness.

The Lord's Passover of the new testament

Jhn.2:4 Jesus saith unto her, Woman, what have I to do with thee? **nine hour is not yet come**)

Jhn.2:6 And there were set there six waterpots of stone, after the manner of the purifying of the Jews, containing two or three ephs apiece.

Jhn.2:7 Jesus saith unto them, **Fill the waterpots with water**. And they filled them up to the brim.)

Jhn.2:8 And he saith unto them, **Draw out now**, and bear unto the governor of the feast: And they bare it.)

Jhn.2:9 When the ruler of the feast had tasted the water that was made wine, and knew not whence it was:)

→ When the hour was come, the water was made wine.

Luk.22:14 And when **the hour was come**, he sat down, and **the twelve apostles** with him.

→ When the hour came to sit down at the table of the Lord's Passover, the status of the disciples of Jesus are changed to apostles⁶⁵⁰² in the gospel of John (refer to "4. Pentecost" for details)

Luk.22:15 And he said unto them, **With desire I have desired to eat this passover with you before I suffer**: Luk.22:16 For I say unto you, I will not any more eat thereof, until it be fulfilled in the kingdom of God

Luk.22:17 And he took the cup, and gave thanks, and said, Take this, and divide it among yourselves: (Luk.22:18 For the kingdom of God is not in words)⁶⁵⁰² but in power)

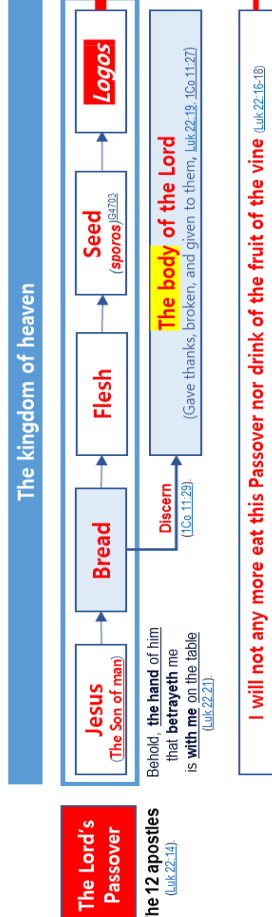
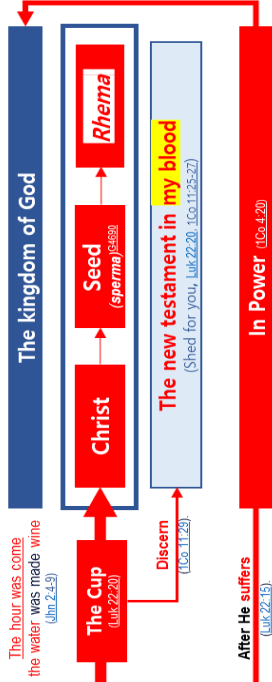
→ Jesus meant that He will no more eat the Passover of the bread of the logos of God with us (the old testament), because after He suffers, the water (the logos) will be made into the wine (the rhema) that is in the kingdom of God (the new testament), which will be done in power.

Luk.22:19 And he took bread, and gave thanks, and brake it, and gave unto them, saying, This is my body, which is given for you: this do in remembrance of me.

Luk.22:20 Likewise also the cup after supper saying, This is the new testament in my blood, which is shed for you: But, Behold the hand of him that betrayeth me: he is with me on the table.

Luk.22:21 And truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed! Luk.22:22 And they began to enquire among themselves, which of them it was that should do this thing, not discerning the Lord's body.)

→ **The bread** that Jesus broke is His body, and the cup is the new testament in His blood. But because the hand of a traitor (Judas) was with Jesus at the Lord's table we must discern the Lord's body when eating the Lord's Passover at His table.



... 1720... **... 1720...** ...

33:4

... **...** ...

• **...** ...

• **...** ...

... ...

... ...

...

... ...

... ...

...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

199... 26... **...** ...

www.therhemaofthelord.com/uncategorized/26 ...

200... 40... 4... **...** ...

וַיְרֵא אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל וַיֹּאמֶר אֵלָיו... (4) וַיֹּאמֶר אֵלָיו יְהוָה... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל

אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

→ וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** 40 אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (16:4) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** 244.. (3:8, 16:35, 17:2)

- וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (10/1) וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... 245

+ וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (2:24) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (9:59) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (15:48) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (2:49) 246.

- וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (uk9:59-62) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (2:5) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**
וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** (1:49) **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

(וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**)

וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל** 23:9 **וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל**

244 עַם 23. "אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל" & וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... 244

www.therhemaofthelord.com/the-bread/23 -וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... 244

245 עַם 36. "אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל" & וַיֵּרֶד מִן הַשָּׁמַיִם... 245

www.therhemaofthelord.com/uncategorized/36 -וְיִרְאֶה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל... 246

246 רָאָה אֶת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל

عمر 2:19 آنکھوں سے نظر ناس، "جہاں سے نظر ناس گھر"۔
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
نظر ناس آنکھوں سے نظر ناس، انہوں نے کہا (عمر 2:19)^{H376}
جہاں سے نظر ناس لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا۔

عمر 2:20 آنکھوں سے نظر ناس۔
وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا، "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
جہاں سے نظر ناس لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا۔

عمر 2:21 آنکھوں سے نظر ناس۔
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

عمر 2:22 آنکھوں سے نظر ناس۔
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

عمر 2:23 آنکھوں سے نظر ناس۔
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

→ عمر 2:23 آنکھوں سے نظر ناس۔
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا، "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"
انہوں نے کہا کہ "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

²⁵⁴عمر 20. "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟" & "وہ لکھتا ہے کہ انہوں نے کہا؟"

تَحْجَ 6-ث] "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُ كُوسَعِي لَأْ كُوسَعِي

Table with 3 columns: To Jesus/Judas Iscariot/Woman, Mark/The chief priests & the scribes/To Woman, and Matthew/Jesus' disciples/To Woman. It compares the actions of the woman with the criticisms of Judas Iscariot and the chief priests regarding the use of an alabaster box of ointment.

→ سَدَعِي كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 14:3، "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 265 "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 266 "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 267 "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

كُوسَعِي 26:13 "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

كُوسَعِي 1722... كُوسَعِي

كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 267 "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

تَحْجَ 6-ث] "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُ كُوسَعِي لَأْ كُوسَعِي

By faith, a woman's sins are forgiven even prior to the crucifixion of Jesus (Luk 7:47)

Table with 3 columns: To Jesus, Simon, and Woman. It compares the actions of Simon and the woman, noting that the woman's sins were forgiven before Jesus' crucifixion.

265 "G4937 - syntribō" - سَدَعِي كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... (kjv). "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 16 كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 2023.

1722... كُوسَعِي https://www.blueletterbible.org/lexicon/g4937/kjv/tr/0-1 كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

266 "G211 - alabastron" - سَدَعِي كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... (kjv). "كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... 31 Mar, 2023.

1722... كُوسَعِي https://www.blueletterbible.org/lexicon/g211/kjv/tr/0-1 كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

267 "تَحْجَ 6-ث] [كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ" كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

10 www.therhemaofthelord.com/the-7-feasts-of-the-lord/ كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ... كُوسَعِي كُوسَعِي يِرْتُ...

268 عہدۂ فریضہ

۱۰۰- سہ ماہی فریضہ کی سزا کا وقت فریضہ کی ابتدا سے پہلے ہی سے نماز کا وقت ہو گا اور نماز کا وقت

(سورۃ بقرہ: 178)

۱۰۰- اگر نماز کے وقت نماز کی ابتدا ہو جائے اور نماز کے وقت نماز نہ ہو، تو نماز کی ابتدا ہونے تک نماز پڑھنی ہے۔ (سورۃ بقرہ: 178)

۱۰۱- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۲- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۲- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۳- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۳- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۴- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۵- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

۱۰۶- نماز کے وقت نماز پڑھنے کا وقت ہے۔

268 عہدۂ فریضہ

www.therhemaofthelord.com/uncategorized/29

269 عہدۂ فریضہ

וּבֵרַח אֶת אֲנָשֵׁי הָאָרֶץ וְאֶת הַיְהוּדִים וְאֶת הַלְוִיִּם וְאֶת הַיִּשְׂרָאֵלִים

אֶת כָּל הַלְוִיִּם וְאֶת כָּל הַיְהוּדִים וְאֶת כָּל הָאֲנָשִׁים וְאֶת כָּל הַיִּשְׂרָאֵלִים

וְאֶת כָּל הַיְהוּדִים וְאֶת כָּל הָאֲנָשִׁים וְאֶת כָּל הַיִּשְׂרָאֵלִים

עַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ

- עַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

→ 4 וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

→ עַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
וְעַל מַעֲשֵׂיהֶם וְעַל יָמֵיהֶם אֲשֶׁר עָשׂוּ בְּחַדְשֵׁי הַשָּׁנָה הַזֹּאת כִּי יָצְאוּ מִמִּצְרָיִם מִיַּד מִצְרַיִם וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה

²⁸⁴[ע 6-4], " שְׁנֵי יָמֵי 27 אֲרֶמְלֵת אֵלֶיךָ וְעָלֶיךָ " (רַבִּי, שְׂוֵיָה, אֵיבֶר) עַד 23.
www.therhemaofthelord.com/uncategorized/27-כְּתָבֵי הַתּוֹרָה-מִצְרַיִם-מִצְרַיִם-מִצְרַיִם-מִצְרַיִם

²⁸⁵ע 24. " הַיְהוּדִים לְבָנֵי אֱלֹהֵי אֱמֶת (3/3) "

www.therhemaofthelord.com/new-jerusalem/24-בְּיַמֵּינוּ-בְּיַמֵּינוּ-בְּיַמֵּינוּ

²⁸⁶אֲרֶמְלֵת אֵלֶיךָ וְעָלֶיךָ 13:15.

God made the life of the earth, beast, and everything that moves upon the earth after their kind, which God saw them good. Then God created man and blessed them and said, "Be fruitful, and multiply, and replenish the earth, and subdue it," and rule over the following things:

- ① over the fish of the sea (the gathering together of the waters, Gen 1:10) - the fish meaning **the things that move in the gathered waters or the logos of God** (refer to "The *thema* is for God's chosen witnesses" for details).
 - ② over the beast - the beasts is the things that move upon **the ground** (1:12)
 - ③ over the fowl of the heaven - the fowl of the heaven means the **life of the soul** that fly above the earth in **the open firmament of heaven**
 - ④ over the life that moves upon the earth - the life that moves upon the earth means **the life that is of the earth** (or earthly things)
- Therefore, **God's command to man (male and female)** ^{Gen 1:28} to rule over the four things listed above is as follows: **Be fruitful (grow the fruits of your righteousness), multiply (multiply the logos of God sown in you), and replenish the earth (fill your flesh with the logos of God by eating the meat of the Son of man), and subdue it (subdue all things that move in the logos of God, upon the ground, the life of the soul that fly above the earth in the open firmament of heaven, and the life on earth).**

Gen 1:12 **The earth brought forth (from the seed of Christ), after God's kind):**

- Grass ^{H1877}
- Herb ^{H242}
- **The Fruit of the tree** (made firm, shuts the eyes)

The beast or cattle (Strong's H929) in Gen 1:24 refer to living creature other than man. These creatures are described as the living creatures of the field that lived before the pastures ^{H929} of the wilderness brought forth anything, thus had not eaten the fruit from the tree, the fig tree, and the vine that gives strength.

• However, the beasts or cattle (Strong's H1165) that were given spiritual water in Num 20:8 are the living creatures that have been depastured. Therefore, the beast in Gen 1:24 and Joe 2:22 refer to the Gentile nations of the field (or of the world, Mat 13:38) waiting to be spiritually nourished, while the beasts in Num 20:8 refer to those who have been depastured in grass (Psa 23:2) and are led by the LORD beside the resting waters to have their souls restored in the paths of righteousness (Psa 23:3).

• Therefore, **the beasts are those who have yet to be made righteous.**

The grass, herb, and fruit

→ The root meaning of the tree (Strong's H6529) is to make firm and to shut eyes (Strong's H6095), so a tree that makes fruit with the seed in itself means the fruit of the tree firmly shuts your eyes to see the evil things (Gen 3:4).

→ To reiterate Gen 1:12, the grass, herb, and fruit from the earth after God's kind were sown from the seed of Christ, and **the fruit of the tree** firmly shut your eyes to see the evil things, which was good in the sight of God (Note that grass is the first sprouts of the earth to spring up from Christ's seed).

→ In the eyes of a woman whose husband is a man with a living soul, the fruit from the tree of the knowledge of good and evil (or the law) was good for gaining wisdom of the law. Therefore, the fruit opened the eyes of man ^{H620} and woman, which had been firmly closed to see the evil things (Gen 3:4), and the apron of sewn fig leaves hid their nakedness (refer to "From Adam's ^{H121} to Bride's ^{H3609} for details).

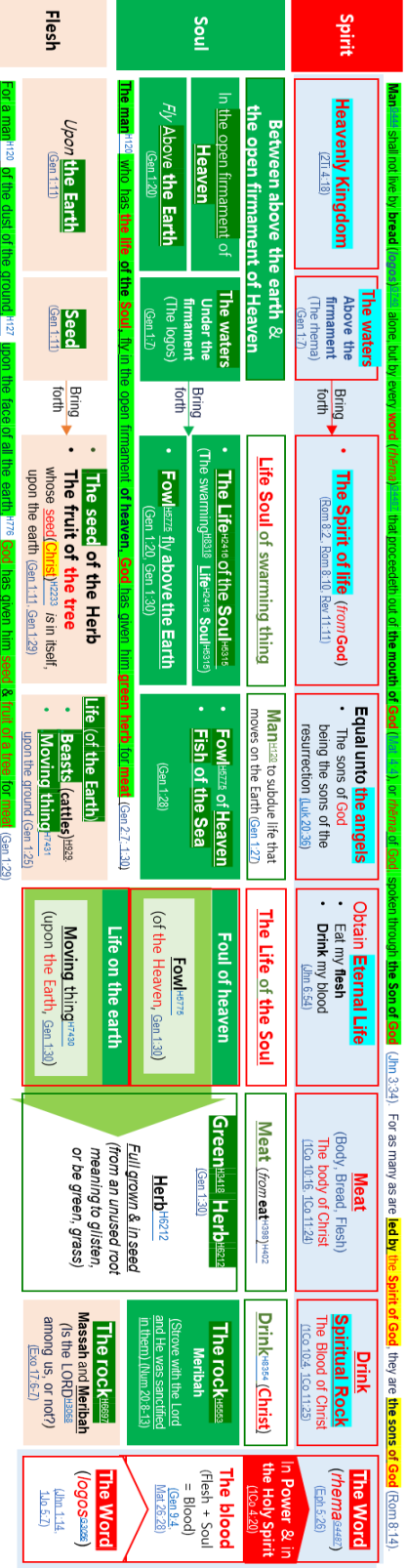
The Lord commanded Moses and Aaron to gather the congregation before the rock ^{H6553} and speak to the rock before their eyes so that He could give the congregation and their beasts the water that came out of the rock. The congregation here refers to rebellious sons of Israel (Num 20:12) and the beasts ^{H128} are their cattle (Num 20:4). Instead of speaking to the rock, ^{H6553} Moses however smote it twice and abundant water was given to the sons of Israel and their beasts

(but why was the water also given to the beasts?).

• The water that was intended to be given to the sons of Israel and their cattle for drinking was intended to sanctify the LORD in the sons of Israel, so the Lord commanded the Moses and Aaron to believe Him that the water would come out of the rock ^{H6553} when they spoke to it, so that the LORD would be sanctified in the eyes of Israel. However, with his disbelief, Moses smitten the rock ^{H6553} with the rod that he used to smite the rock ^{H6553} in Horeb and made the water appear the same to that which was intended for "the people ^{H6977}" to drink.

• Merhab ^{H692} water is drunk by the sons of Israel who strove with the Lord and sanctified the LORD in them. Therefore, the people who have tempted the LORD drank the water of Massah, while the sons of Israel who have sanctified the LORD within them drank the water of Meribah, which is the spiritual drink from the spiritual Rock (petra), ^{Gen 2:3} Christ. Christ sanctifies and cleanse the church by the washing of water of Meribah.

Flesh, Soul, & Spirit) Psalm 23



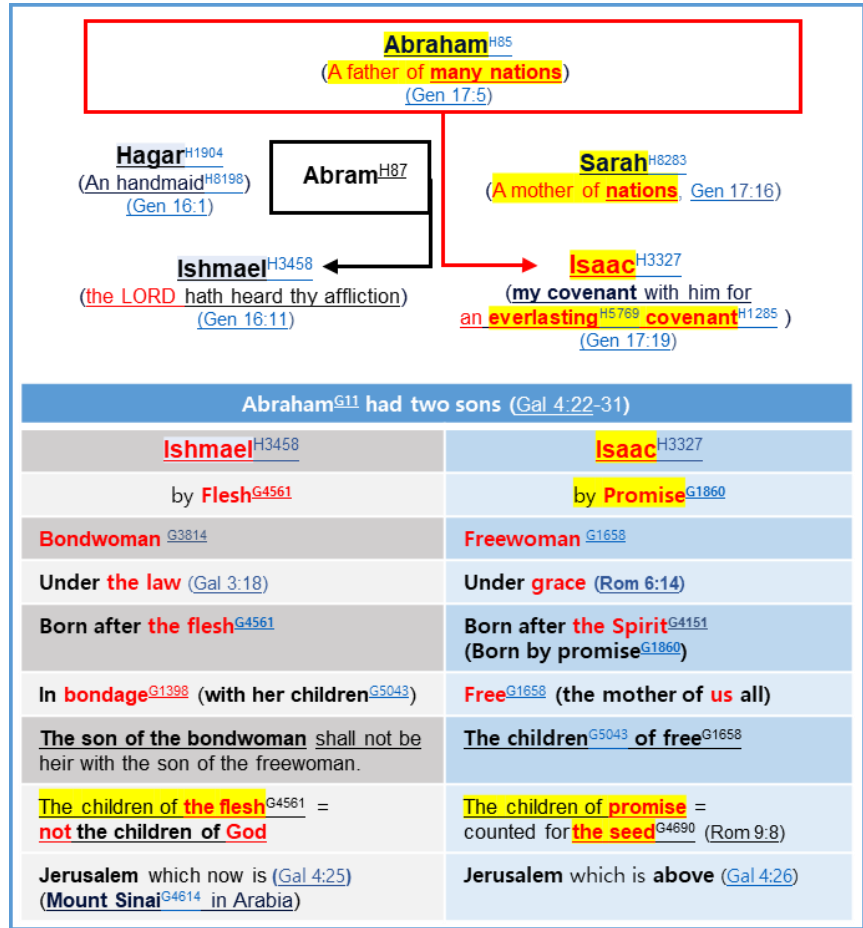
287 ﴿تَرْجَمَ﴾ 27. ﴿رَسْمًا﴾، ﴿سَرُوسًا﴾، & ﴿مَرْمَرًا﴾ حَقَّقَ 23.

15:47 1537 1093 5517

[2-6] 2000 2000 2000 2000 2000

15:40 1	2000 2000	2000 2000
15:47 1	2000 2000	2000 2000
15:39 1	2000 2000	2000 2000
15:42 1	2000 2000	2000 2000
2000 2000	2000 2000	2000 2000
[2-6] 1	2000 2000	2000 2000
different 2000 2000	2000 2000	2000 2000
	2000 2000	2000 2000
	2000 2000	2000 2000

311 6:55 "2000 2000 2000 2000 2000 2000" & 14:17 2000
 [2-2] "2000 2000 2000 2000 2000 2000" www.therhemaofthelord.com/uncategorized/30
 312 2000 2000 2000 2000 2000 2000
 313 2000 2000 2000 2000 2000 2000

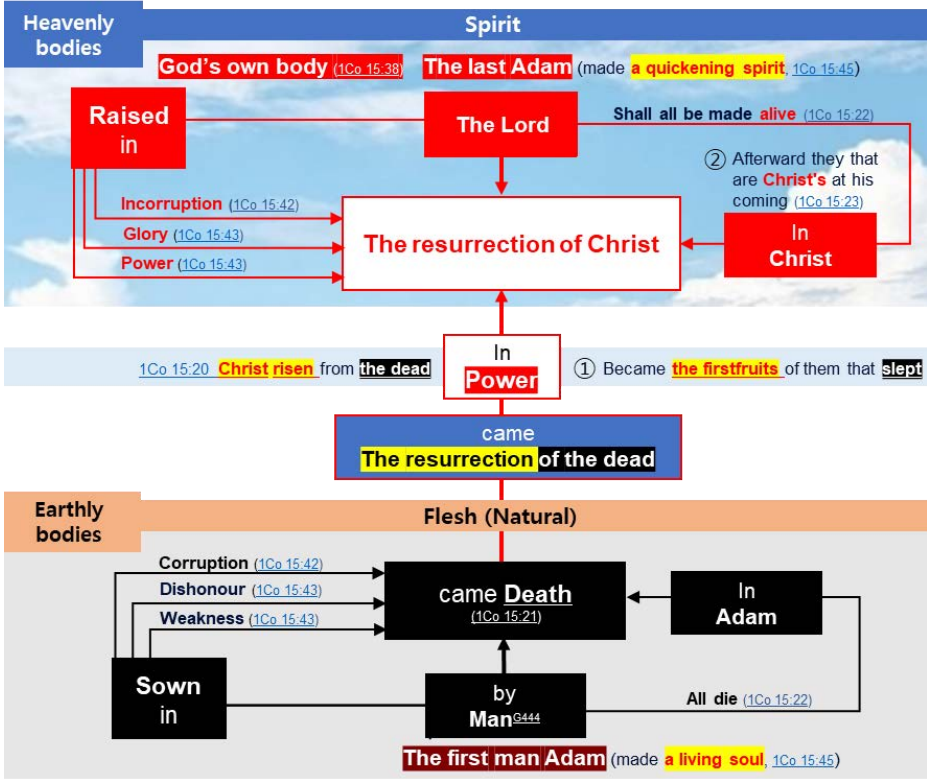


→ تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]
 (تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314) [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]
 تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]

314 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314] www.therhemaofthelord.com/course2/7 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]
 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314] www.therhemaofthelord.com/new-jerusalem/24 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]
 315 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314] www.therhemaofthelord.com/uncategorized/32 [تذکرہ تفسیری چھوٹا سا تذکرہ تفسیری + تذکرہ تفسیری 314]

The first Adam & The last Adam

Wherefore of these men which have companied with us all the time that **the Lord Jesus went in and out among us**, **Beginning from the baptism of John**, unto that **same day that he was taken up from us**, must one be **ordained to be a witness with us of his resurrection** (Act 1.21-22).



الخبر 6- [خبري كرسى] و ارسوز خوز ارسوز 316

The field of blood (A possession)

Unbelief = hardness of heart
 Afterward he appeared unto the eleven as they sat at meat,
 • and upbraided them with their unbelief and hardness of heart
 • because they **believed not them which had seen him after he was risen** (Mar 16:14)

1Co 15:20 But now is **Christ risen** from the dead, and become **the firstfruits** of them that **slept**.^{G2837}

The flowchart shows two paths:
 - **Christ's Path:** **Christ** → **Risen** (knew) → **No corruption** → **Preach** → **The kingdom of God**.
 - **Fathers' Path:** **Fathers** → **Dead** (knew) → **corruption** → **(Do not Follow)** → **Your fathers' tradition**.

Jhn 6:49 **Your fathers** did eat manna in the wilderness, and are **dead**.
 Col 2:8 Beware lest any man **spoil** you through **philosophy** and **vain** deceit, after **the tradition of men**, after the rudiments of the world, and not after **Christ**.
 1Pe 1:18 Forasmuch as ye know that ye were **not redeemed with corruptible things**, as silver and gold, from your **vain conversation received by tradition from your fathers**.

Sow^{H2232} to yourselves (Hos 10:12)
 • **in righteousness**,^{H8666} **reap in mercy**.^{H2617}
 • **break up your fallow ground**.^{H5215}
 → for it is **time to seek the LORD**, **till he come** and **rain(teach)**.^{H3384} **righteousness** upon you.

316 ورسوز 37. "خبري كرسى و ارسوز خوز ارسوز"

317 ورسوز 37. "خبري كرسى (الرسوز)".

7 וָסַרְתָּ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:1) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וַיִּרְאֶה אֱלֹהִים אֶת אֲבֹרָתוֹ וַיִּשְׁמַע אֶת קוֹל אֲבֹרָתוֹ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ
וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ (7:2) וְהָיָה 4 נְסִיחַ 4 דָּוָר לְעֵינֶיךָ

318 אִשְׁרָאֵל בְּיַמֵּי מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן וְעַד הַיּוֹם 14:1

319 [a-7] "שָׁלוֹם וְיָמִים 18 אִשְׁרָאֵל בְּיַמֵּי מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן וְעַד הַיּוֹם 3. וְעַד הַיּוֹם 144,000.

144000-www.therhemaofthelord.com/the-7-feasts-of-the-lord-144000/

12,100,000, & 10,000,000

12,1427

8-7:5

12

12,1000

12,144,000

1,000

144,000

10,000

10,000

5:11

18:6

18:7

18:8

18:9

10,000

10,000

10,000

10,000

4410

18:9

9:16

3:1, 3:14

5:3

16:14

23-13:22

10000

15:48

15:45

10:28

162

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
 أَنَّهُ سِرٌّ لِيُتْرَكَ لِلرَّسُولِ

→ فَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 18)

• وَسُورَةُ الْبُرُوجِ

- إِسْمُ الْقُرْآنِ الَّذِي يُدْعَى بِهِ فِي حَقِّهِ عَلَى الْإِنْسَانِ عِندَ خَلْقِهِ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 1) وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
 أَلِيمٌ...

سُورَةُ الْبُرُوجِ 4972 هـ بِرِسْمِ سُبْحَانَكَ رَبِّكَ رَبَّنَا حَمِيدٌ... اللَّهُ تَعَالَى. 321

أ- 144.000 رِبْعًا وَفِيهَا مِنْ عَذَابِ الْبُرْجِ نَارًا وَأَبْوَابُهَا مِنْ ذَهَبٍ لِيُخْرِجَ مِنْهَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَبُّهَا صَوْبٌ أَلِيمٌ...
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 2، 3: 2، 4: 9، 5: 2، 6: 1، 7: 1، 8: 1).

• وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ

- وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ...
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ...
 إِسْمُ الْقُرْآنِ الَّذِي يُدْعَى بِهِ فِي حَقِّهِ عَلَى الْإِنْسَانِ عِندَ خَلْقِهِ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 1) وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
 أَلِيمٌ...

→ وَالَّذِي يُزَيِّرُ الْقُرْآنَ فِي صُدُورِهِمْ أَحْوَجًا لِيُذَكِّرُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 2)

+ أ- 144.000 رِبْعًا وَفِيهَا مِنْ عَذَابِ الْبُرْجِ نَارًا وَأَبْوَابُهَا مِنْ ذَهَبٍ لِيُخْرِجَ مِنْهَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَبُّهَا صَوْبٌ أَلِيمٌ...
 سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

+ فَتَرْجُلُهُمْ وَخِيَارُهُمْ فِيهَا جَذَبٌ مُبِينٌ 144.000 رِبْعًا...
 سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

- 144.000 رِبْعًا... (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 2)

• أ- 144.000 رِبْعًا وَفِيهَا مِنْ عَذَابِ الْبُرْجِ نَارًا وَأَبْوَابُهَا مِنْ ذَهَبٍ لِيُخْرِجَ مِنْهَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَبُّهَا صَوْبٌ أَلِيمٌ...
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 2)

• وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ...
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ...
 إِسْمُ الْقُرْآنِ الَّذِي يُدْعَى بِهِ فِي حَقِّهِ عَلَى الْإِنْسَانِ عِندَ خَلْقِهِ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 1) وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
 أَلِيمٌ...

321 هـ 23. "عَمْرٍو، دَسَّ، & قَمْرٍو وَرَبُّهُمُ الرَّحْمَنُ"

www.therhemaofthelord.com/the-bread/23

وَعَلَى الْبُرْجِ نَارًا لِيُخْرِجَ مِنْهَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَبُّهَا صَوْبٌ أَلِيمٌ...
 وَفَمَنْ سَنَّ اللَّهُ فَرْجًا لِيُخْرِجَ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دَارِهِمْ وَأُولَئِكَ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ...
 إِسْمُ الْقُرْآنِ الَّذِي يُدْعَى بِهِ فِي حَقِّهِ عَلَى الْإِنْسَانِ عِندَ خَلْقِهِ (سُورَةُ الْبُرُوجِ: 1) وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَأَنَّ الْكُفْرَانَ كَثُرَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
 أَلِيمٌ...

322 هـ 14. "عَلَى الْبُرْجِ نَارًا لِيُخْرِجَ مِنْهَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَبُّهَا صَوْبٌ أَلِيمٌ"

www.therhemaofthelord.com/repentance-baptism/14

323 هـ 35. "عَمْرٍو (عَمْرٍو) وَرَبُّهُمُ الرَّحْمَنُ"

www.therhemaofthelord.com/uncategorized/35

1. **لَا يَسْتَأْذِنُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ أَنْ يَحْمِلُوا أَرْسَالَهُمْ إِلَّا عَلَيْهِمْ نَجْمٌ مِنَ السَّمَاءِ** (سورة الحديد: 17).³³⁰ 1 وَسَرَّ دَلَّكَ لَوَدَدَىٰ نَزَّلَىٰ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

→ تَجْرِبَةُ هَذَا كَمَا فِي الْقُرْآنِ (سورة الحديد: 17) لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

أَنْ تَسْرَأُوا... لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ (سورة الحديد: 17).

وَأَيُّ سَعْيٍ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ دُونَ ذَلِكَ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

وَأَيُّ سَعْيٍ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ دُونَ ذَلِكَ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (سورة الحديد: 17).

2. **وَسَرَّ مَعْرُوفٌ** (سورة الحديد: 17) لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

→ 7 وَسَرَّ دَلَّكَ لَوَدَدَىٰ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ³³⁰

لَأَسْرَأُوا

لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

→ 2 وَسَرَّ مَعْرُوفٌ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ³³¹ 7 وَسَرَّ مَعْرُوفٌ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

3. **وَسَرَّ مَعْرُوفٌ** (سورة الحديد: 17) لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

→ 1000 لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ... كَمَا فِي الْقُرْآنِ

أَيُّ سَعْيٍ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ دُونَ ذَلِكَ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (سورة الحديد: 17) لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ³³²

³³⁰ (سورة الحديد: 17) 7 وَسَرَّ دَلَّكَ لَوَدَدَىٰ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ

³³¹ (سورة الحديد: 16-11:15، 16-14:14) كَمَا فِي الْقُرْآنِ لَأَسْرَأُوا فَمَا لَكُمْ فِي الْقِيَامَةِ الْيَوْمِ (3 وَسَرَّ مَعْرُوفٌ 2 وَسَرَّ مَعْرُوفٌ).

³³² (سورة الحديد: 6-20:5) كَمَا فِي الْقُرْآنِ (The 4th watch) ..

The 7 feasts of the LORD

3. First-fruits (The 144,000)

Spring

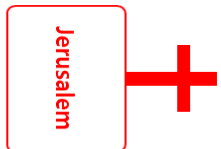
• **Bones = Bone & Flesh** (Then he said unto me, Son of man, these bones are the whole house of Israel. (Eze 37:11)
 • **Woman = Bone & Flesh** (And Adam said, This is now bone of my bones and flesh of my flesh; she shall be called Woman, because she was taken out of Man. (Gen 2:23)
 • **Man** (after sinned) = **erred** (Flesh) (And the LORD said, My spirit shall not always strive with man; for that he also is **erred** (Flesh). (Gen 6:3)
 • **The man** (before sinned) = **The life** of the soul
 → Originally, the masculine and female, Gen 5:2, was created in **God's** image (Gen 1:27), but after the man sinned, the ground was cursed, and the dust of the ground, which is the **flesh of the life of the soul** lost its **mist of the earth** (Therefore prophesy and say unto them, Thus saith the LORD God of Israel, Behold, I will open your graves, and cause you to come up out of your graves, and bring you into the land (ground) of Israel. (Eze 37:12).
 → This prophecy by the LORD (Eze 37:12-14) was fulfilled when "Christ rose from the dead, and became the firstfruits of them that slept." (1Co 15:20).
 This is what **Ezekiel** meant when he said about **dried bones**. "Then he said unto me, Son of man, these bones are the whole house of Israel; behold, they say, Our bones are dried, and our hope is lost: we are cut off for our parts. (Eze 37:11)
 → Therefore prophesy and say unto them, Thus saith the LORD God of Israel, Behold, I will open your graves, and cause you to come up out of your graves, and bring you into the land (ground) of Israel. (Eze 37:12).
 → This prophecy by the LORD (Eze 37:12-14) was fulfilled when "Christ rose from the dead, and became the firstfruits of them that slept." (1Co 15:20).

Fulfilled the prophecy of Ezekiel (Eze 37:11-14)

Risen Christ → became the firstfruits of them that slept
 → That slept means the death of man (1Co 15:20-22).
 "For since by man came death by man came also the resurrection of the dead (1Co 15:21)."
 → By rising from the dead, Christ defeated death, and the next are man in Christ (1Co 15:23)

① Christ the firstfruits → ② They that are Christ's at his coming

Since Christ is risen, the next is they that are at Christ's coming.
 If at his coming, who are they? or who are his firstfruits?
 → It is revealed in David's response regarding his house before the LORD in 2Sa 7:25-26 and 2 Samuel 7 also corresponds to the 144,000 described in Revelation 7, 14, and 21.



How it all began
 Prepare ye the way of the Lord, make His paths straight, John the Baptist, preached in the wilderness of Judaea.
 → Repent ye: for the kingdom of heaven is at hand" (Mat 3:1-3).
 After that, John was put in prison, Jesus came into Galilee, preaching the gospel of the kingdom of God.
 → "The time is fulfilled, and the kingdom of God is at hand: repent ye, and believe the gospel."
 Thus it is written, and thus
 → It behooved Christ to suffer, and to rise from the dead the third day: (Luk 24:46)
 → The repentance and remission of sins should be preached in Christ's name among all nations.
 → Beginning at Jerusalem (Luk 24:47) You are witnesses of these things (Luk 24:48)

Who are the 144,000? David's response (2Sa 7:23) 144,000 (Revelation 7, 14, 21)

One nation	In the earth	All the tribes of the children (the sons) of Israel
God's people	Thy people = Israel	The number of them which were sealed
God's redeemed ones	Redeemedst to thee from Egypt	Redeemed from the earth (the ground)
Name	Putest thou a name	Father's name written in their foreheads

God's people, Israel, whom God redeemed from Egypt, they are of the house of David for a great while to come, they are virgins, the firstfruits unto God and to the Lamb, the number of all the tribes of the sons of Israel who are sealed, having a Lamb's Father's name written in their foreheads, singing a new song before the throne, redeemed from the ground.

But why tarry in the city of Jerusalem?

Luk 24:49 And behold, I send the promise of my Father upon you: but tarry ye in the city of Jerusalem, until ye be endued with power from on high.

The meaning of the city of Jerusalem
 Jerusalem is the city of the great King (Isa 52:1) and a city of truth (Zec 8:3), where the house of the LORD is (Ezr 1:5) and where his name is (2Co 6:5-6).
 → Know ye not that ye are the temple of God, and that the Spirit of God dwelleth in you? (1Co 3:16)
 Thus, tarrying in the house of the LORD, in the truth of his great name in you.

Those who dwell at Jerusalem are Jews and devout men out of every nation under heaven.
 → Have seen the LORD therefore glad
 → Be filled with the Holy Spirit
 → For the kingdom of God is not in word, but in power.
 These are the words which I spoke unto you, while I was yet with you, that all things must be fulfilled, which were written in the law of Moses, and in the prophets, and in the psalms, concerning me.
 Then opened he their understanding, that they might understand the scriptures.

Then opened he their understanding, that they might understand the scriptures.

March 24, 2024

Purim

Daniel 9:27	Moedim	#	Duration	Jewish Calendar	2024 God's Calendar	Feast	Event	Bible Verse	Status
69 Weeks	Spring Feasts	1	14 Days	Nissan 14	End of the Day, April 22, 2024	Passover (Shabbat)	Jesus' Crucifixion	Leviticus 23:4-8	Fulfilled (at Christ's 1st coming)
		2	24 Hours	Nissan 15-22	April 23 – April 29, 2024	Unleavened bread (Chag Hamotzi)	Jesus' Burial (in the grave)	Leviticus 23:6	
		3	3 (2-6) Days	Nisan 17	Sunday of Unleavened Bread (April 24 or April 28, 2024)	First Fruits (Yom habikkurim)	Christ's Resurrection	Leviticus 23:10	
		4	50 Days (7days * 7wk)+1	Sivan 7 (50 days after Firstfruits)	June 12 or June 16, 2024	Pentecost (Feast of Weeks) (Shavu'ot)	The Holy Spirit is given	Leviticus 23:16	Fulfilled
The fulness of the Gentiles									
1 Week (70th Week)	Fall Feasts	5	135 Days	Tishrei 1	October 3, 2024 (Rosh Hashanah)	Trumpets (Yom Teru'ah)	The feast of trumpets is observed over two days because the new moon can appear on either day that no one knows (Mat 24:36).	Leviticus 23:24	To be Fulfilled
		6	10 Days	Tishrei 10	October 12, 2024 (Begins at sundown)	The Day of Atonement (Yom Kippur) the holiest.	Leviticus 16: 23-26-32		
		7	5 Days	Tishrei 15-22	October 17–24, 2024	Tabernacles (or Booths) (Sukkot)	Leviticus 23:34		
73 Days Dec 26, 2024 – Jan 2, 2025 Hanukkah									

Moedim	#	Duration	Harvest	Expected time	Feast	Event	Bible Verse	Status
What will happen?	1	The Great Tribulation (3.5 years)	BARLEY	At the start of the Great Tribulation	Before The feast of Trumpets	Wise virgins (the 144,000) First to be raptured before the Great Tribulation)	Rev 7:4-8	To be Fulfilled
	2		WHEAT	The coming of the Lord Jesus Christ	The day of Atonement	Foolish virgins (the 2nd rapture for the Great Tribulation Holy saints)	Rev 7:9, Rev 11:14, Rev 14:14	
	3		GRAPES (The clusters of the vine)	Christ's appearing	Feast of Tabernacles	Other virgins (On the ground during a 1,000 years)	Rev 20:5-6	

- چرئى (1 وس) اذعلاى سمرعلا ناعروفاوسى قىمق قرونا قراوس اذقوسى سرفوسرور [684](#) مؤقوالله اتر هعروفو چرئى (خنا، 2:7:3)، [444](#) اى قوسى اترى ناعرا سى اى قى سى اتر رذساق.

[3:7](#) اذنا چرئى اذعلاى سمر، ردا سدى سدوس سمرعلا ناعروفا قوا.

قېمق قرونا قراوس اذقوسى سرفوسرور... [684](#) مؤقوالله اتر هعروفو چرئى

قوسر سرفو. [444](#)

→ اترى ناعرا سى (قوسى چرئى) اتر قى سى اتر (قوسى قىمق قراوس) وس،

سداى سرفو چرئى (1 اتر سرفو 3:8) اتر اترى ناعرا سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

ناعرا سى اتر (2 وس عرئى سرفو سرفو). اتر ناعرا سى قرونا (3 وس سرفو وس) (2:1:3).

[2:1](#) چرئى اتر سرفو، اتر سرفو اترى اترى سدوس سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

سرفو سرفو،

اتر اتر سرفو اترى سرفو اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

[2:2](#) چرئى اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

سرفو سرفو (قوسى) وس، اتر سرفو اترى (سداى اترى) وس سرفو. [1992](#) اتر سرفو سرفو سرفو

قوسر سرفو،

اى سرفو ناعرا سى قرونا قراوس اترى اترى

[2:3](#) اتر وس چرئى اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

اتر سرفو اتر وس سرفو سرفو سرفو

قوسى قراوس سرفو سرفو (قوسى قراوس) قراوس، [646](#) مؤق

اتر اتر (اترى). [444](#) مؤق قراوس [266](#) سرفو سرفو سرفو، قوسى قراوس، [684](#) مؤق

→ [2:2](#) چرئى اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

[1](#) اتر سرفو 3:8 قوسى ناعرا چرئى سداى سرفو چرئى. اتر سرفو سداى سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

چرئى سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

اتر سداى سرفو اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

(9:12) اتر 1 وس وسى سرفو

[9:12](#) اتر وس سرفو سرفو. اتر، اتر سرفو اتر سرفو قوسى سرفو سرفو سرفو

☞ [9:12](#) اتر (1) وس سرفو سرفو. سرفو، چرئى سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

(9:13:16) 6 وس ردا سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

[9:13](#) اتر وس ردا سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

[9:14](#) اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو

[9:15](#) اتر اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى اترى

اتر سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو سرفو [444](#)

תָּרָם דָּחֵמֵנֵי נַחֲשֵׁי (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) אַל תִּסְרֹף אֶת־רֹאשִׁי וְאֶת־מְצִלְתִּי אֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי. (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) אֲרֹמְסֶנּוּ עִמָּךְ וְהַתִּיבֵנוּ.
 “שֶׁאֵלֶּיךָ, אֲרֹמְסֵנוּ וְהַתִּיבְנוּ” (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) אֶת־נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי וְאֶת־מְצִלְתִּי וְאֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי.
 אַל תִּסְרֹף אֶת־רֹאשִׁי, וְאֶת־מְצִלְתִּי, עִמָּךְ נָשָׂרֵף וְנִחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי אֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי.
 (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) (10:9-10).

→ נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) שְׁמֵנוּ לְנַחֲשֵׁי וְיִשָּׁרֵף אֶת־רֹאשִׁי וְאֶת־מְצִלְתִּי וְאֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי וְאֶת־נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי.
 אֲלֹהֵי אֲרֹמְסֵנוּ. אֲלֹהֵי תָרָם דָּחֵמֵנֵי נַחֲשֵׁי תְּרַחֵם... אֱלֹהֵי אֲרֹמְסֵנוּ (אֱלֹהֵי... אֱלֹהֵי, אֱלֹהֵי אֱלֹהֵי... rhēma... אֱלֹהֵי 8:47).
 אַל תִּסְרֹף אֶת־רֹאשִׁי וְאֶת־מְצִלְתִּי אֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי וְאֶת־נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי.

→ אֱלֹהֵי אֱלֹהֵי נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) אֲרֹמְסֵנוּ עִמָּךְ וְהַתִּיבֵנוּ. אֲרֹמְסֵנוּ עִמָּךְ וְהַתִּיבֵנוּ. אֲרֹמְסֵנוּ עִמָּךְ וְהַתִּיבֵנוּ. אֲרֹמְסֵנוּ עִמָּךְ וְהַתִּיבֵנוּ.
 אֶת־רֹאשִׁי, אֶל... דָּחֵמֵנֵי נַחֲשֵׁי נַחֲשֵׁי וְאֶת־מְצִלְתִּי וְאֶת־בְּרִיתִי וְאֶת־אֱלֹהֵי אֲבוֹתַי. (אֵלֶּיךָ תִּשָּׁרֵף) (13:11).³⁵⁸

³⁵⁸ יוֹר 20. “(תָּרָם) יִשָּׁרֵף, יִסְרֹף, & תְּרַחֵם יִסְרֹף.”
www.therhemaofthelord.com/sword/20 - תְּרַחֵם - תְּרַחֵם - תְּרַחֵם - תְּרַחֵם - תְּרַחֵם - תְּרַחֵם

The two thieves crucified next to Jesus

Jhn 19:18 Where they crucified him, and two other with him, on either side one, and Jesus in the midst.
 → The two were referred to as **thieves** 63027 and **malefactors** 63571 why?

There were **two thieves** 63027 crucified with **Jesus** on the cross, one on the right hand, and another on the left (Luk 23:39).
 • These **two malefactors** 63571 led with **Jesus** to be put to death (Luk 23:32)
 • They that were crucified with him **reviled** 63579 him (Luk 15:32).

Conversation between the two malefactors

- And one of the malefactors 63577 which were hanged, **rallied** on him, saying, **if thou be Christ save thyself and us** (Luk 23:39)
- But the other answering rebuked him, saying, **Dost not thou fear God, seeing (that) 63754 thou art in the same (his) 6354 condemnation (judgment) 723217** (Luk 23:40)
- **And we indeed justly (righteously) 73156 for we receive the due reward (worthy) 6371 of our deeds, but this man 6370 hath done nothing amiss 6362** (Luk 23:41)
- One malefactor rebuked the other malefactor, saying, **Do you not fear God, that you are under his judgement, knowing that we indeed receive the un-righteous reward worthy of our deeds, but this man (righteous Jesus) has done nothing amiss** (regarding "The reward of unrighteousness" refer to video 37 "The field of blood. (A possession)")

Justly (righteously) 73156

- An adverb from dikaios, or righteous 6142

1 Jo 2:1 "if any man sin, we have an advocate with the Father, **Jesus Christ the righteous.**"

→ 1 Jo 2:1 records, **Jesus Christ is the righteous** 61342; thus, the thief who rebuked the other on the cross knew that **Jesus hanging next to Him was Jesus the Christ** (Luk 16:20).

→ This malefactor had knowledge of God, therefore feared Him, and was awoken to **righteousness** (Co 15:34).

Jhn 3:16 For God so loved the world, that he gave his only begotten Son, that **whosoever believeth in him should not perish, but have everlasting life.**

Jhn 3:17 For God sent not his Son into the world to condemn (judge) 63379 the world; but that the world through him might be saved.

Jhn 3:18 **He that believeth on him is not condemned (judged) 63379; but he that believeth not is condemned (judged) 63379 already**, because he hath not believed in the name of the only begotten Son of God (Pro 1:7. The fear of the Lord is the beginning of knowledge; but fools despise wisdom and instruction (Pro 12:15. The way of a fool is right in his own eyes).

→ However, the malefactor who rallied against Jesus did not know the righteousness of God (2Co 5:21), thus said, "If thou be **Christ** save thyself and us," therefore, he was already judged above the ground.
 → This malefactor was a fool because he lacked knowledge and therefore did not fear the Lord.

The malefactor who feared God, said unto **Jesus** hanging next to him, "I, **Lord** 63562 remember me when thou comest into thy kingdom." 6352 (Luk 23:42)

Even though one of two malefactors reviled **Jesus** on the cross, the one who rebuked the other malefactor, "**believed**" that **Jesus is the Christ, the Son of God, and His Lord.**

- In the same way that **Jesus** ascended to His **Father** and **God**, and **God** became the **Father** and **God** for Mary Magdalene in **John 20:17**, **God** will become the **Father** and **God** of the malefactor, who by faith **believed** that **Jesus will ascend** to His **Father, His God**.

Luk 23:42 is therefore interpreted as follows:

• Luk 23:42 **Lord, remember me when thou comest into thy kingdom.**

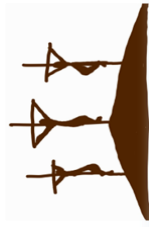
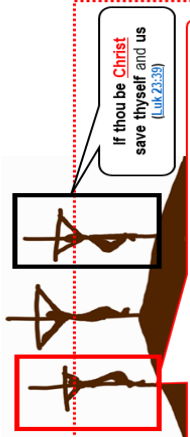
"Lord, I believe you are Jesus Christ, the Son of God, and that you will ascend to your Father and my Father, and to your God and my God. Therefore, remember my faith, when you come into your kingdom."

• Luk 23:43 And **Jesus** said unto him,

"Verily I say unto thee, To day shalt thou be with me in paradise."

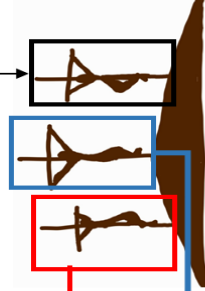
It is possible that the two malefactors acknowledged **Jesus**, making them malefactors in the eyes of those seeking to kill **Jesus**, and thus they were nailed to the cross next to **Jesus**.
 → The malefactor who rallied against **Jesus** knew Him as the logos (or the Son of man), but the other malefactor knew **Jesus** as the mema, and thus believed **Jesus** as the Christ, the Son of God.
 → This is what **Jesus** meant when he said, "**Then shall two be in the field (the world, Mat 13:38), one the one shall be taken, and the other left (Mat 24:40).**"

Luk 12:10 Whosoever shall speak a word **lopos** 63566 against the Son of man - it shall be forgiven; but unto him that blasphemeth 6357 against the Holy Ghost (thema) = it shall **not be forgiven**.
 → In other words, those who **refuse** to receive the Holy Spirit (or the mema), and do not "**believe**" that **Jesus is the Christ (or the messias, Jhn 1:41), the Son of God, will be judged** (cannot be saved, Jhn 20:31), nor can they enter His kingdom.



Even the righteousness 6355 of God which is by 61223 faith of Jesus Christ unto all and upon all them that believe; for there is no difference (Rom 3:22)

Judged already



The Lord's prayer

And lead us not into temptation, but deliver us from evil (Luk 6:13)

24:41 **זְבֻנָּה** 229: **זָרָה** 3459: מו

אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙ אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙

17:35 **זָרָה** 229: **זָרָה** 2983: מו

אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙ אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙

- זָרָה אֶת־בַּיִתְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3459 מו), אִי־נֶחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו), "עַתָּה־זָרָה־לְבָבְךָ֙ וְזָרָה־לְבָבְךָ֙ אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙ אֶת־הַיָּמִים־שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙" (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
 וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

391: (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

- זָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388
- זָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388

388 - mylos - G3458 - שֶׁנֶּחֱמָה־בָּם־לְבָבְךָ֙ (kjv). "וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388". 9 דְּמַי, 2023.

<https://www.blueletterbible.org/lexicon/g3458/kjv/tr/0-1>

389: 41. "זָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388". www.theRHEMAofTheLord.com ("זָרָה־בְּיָדְךָ֙", 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙, 47, 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙)

www.theRHEMAofTheLord.com ("זָרָה־בְּיָדְךָ֙", 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙, 47, 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙)

390: 41. "זָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388". www.theRHEMAofTheLord.com ("זָרָה־בְּיָדְךָ֙", 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙, 47, 7. זָרָה־בְּיָדְךָ֙)

www.theRHEMAofTheLord.com/uncategorized/41

391: 13. "זָרָה־בְּיָדְךָ֙ וְזָרָה־בְּיָדְךָ֙ (יֵשׁׁנָה 3458 מו) 388". www.theRHEMAofTheLord.com/logos-rhema/13

The rhema is for God's chosen witnesses

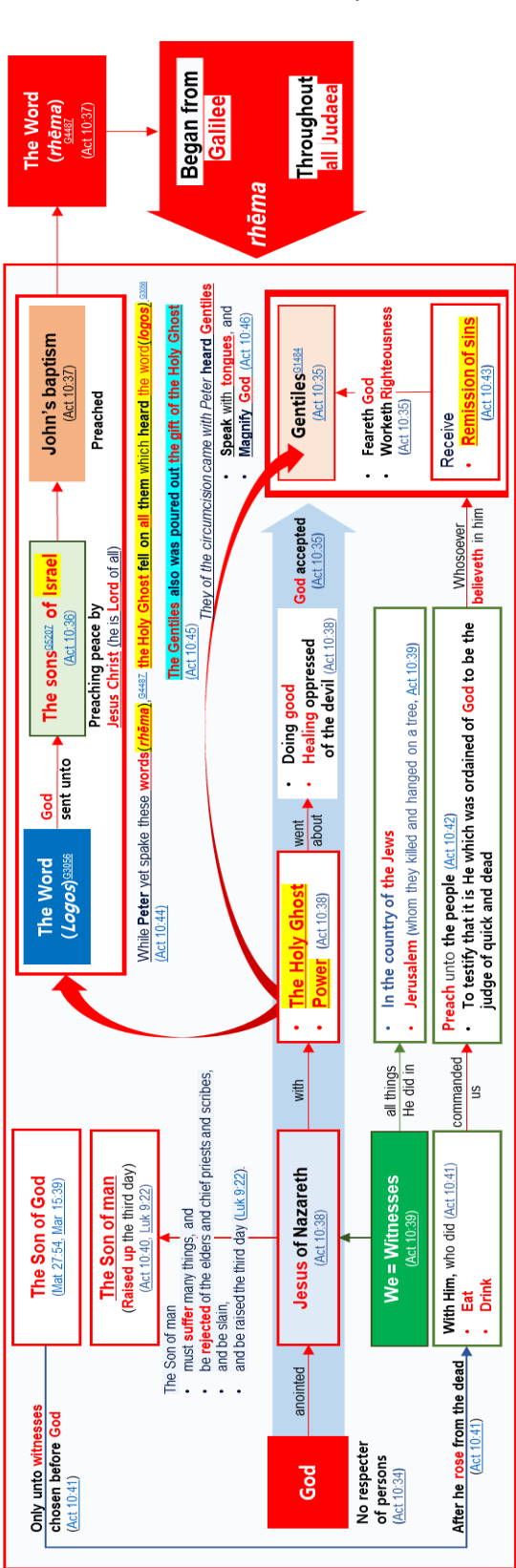
Mat. 16:15 He (Jesus) saith unto them (disciples) But whom say ye that I (the Son of man) am?
 Mat. 16:16 And Simon Peter answered and said, **Thou art the Christ, the Son of the living God.**
 Mat. 16:17 And Jesus answered and said unto him, **Blessed art thou, Simon Barjona, for flesh and blood** ^{61:22} hath not revealed **unto thee, but my Father** which is in heaven.

→ What Jesus meant is that, confessing Jesus is the Christ, the Son of the living God is not revealed by the word, the logos (or flesh and blood), but by the rhema through the Holy Spirit as a result of worthy partaking of the Lord's table.
 → This is done by eating the body of the Lord Jesus (the Holy Spirit not yet been fallen, Act. 8:16), and drinking (His spirit, 1Co.10:4) the cup of the Lord (or the new testament of the word (the rhema) in His blood.

2Co. 4:10 Always bearing about in the body the **decimation of the Lord Jesus** that the life also of Jesus might be made manifest in our body.
 → The only way to remember what the Lord has taught us is to **worthily partaking** at the Lord's table, discerning the Lord's body.
 → By diligently doing so, **grace and peace** will be multiplied unto you through the **knowledge of God**, and of Jesus our Lord (2Pe. 1:2), until you become eyewitnesses of the power and coming of our Lord Jesus Christ (2Pe. 1:16).

The rhema is for God's chosen witnesses

Act. 10:24 Then Peter opened his mouth, and said, Of a truth I perceive that God is no respecter of persons:
 Act. 10:35 But in every nation (Gentiles) ^{9:148} he that feareth him, and worketh righteousness, is accepted with him.
 Act. 10:36 **The word (rhema)** which God sent unto the children (the sons) ^{8:27} of Israel, preaching peace by Jesus Christ, (he is Lord of all)
 Act. 10:37 That word (rhema) I say, ye know which was published throughout all Judaea, and began from Galilee, after the baptism which John preached.
 Act. 10:38 How God anointed Jesus of Nazareth with the Holy Ghost and with power, who went about doing good, ^{52:18} and healing all that were oppressed of the devil; for God was with him.
 Act. 10:39 And we are witnesses of all things which he did both in the land (country) ^{55:5} of the Jews, and in Jerusalem; whom they slew and hanged on a tree.
 Act. 10:40 Him God raised up the third day, and shewed him openly.
 Act. 10:41 **Not to all the people but unto witnesses, before God, even to us, who did eat and drink with him, after he rose from the dead.**
 Act. 10:42 and he commanded us to preach unto the people, and to testify that it is he which was ordained of God to be the Judge of quick and dead.
 Act. 10:43 **To him give all the prophets witness;** that through his name whatsoever believeth in him shall receive remission of sins.
 Act. 10:44 While Peter yet spake these words (rhema), ^{54:8} the Holy Ghost fell on all them which heard the word (logos).
 → God sent the logos to the sons of Israel to teach that Jesus Christ is Lord of all. The rhema is given to God's chosen witnesses who ate and drank with Jesus Christ of Nazareth after He rose from the dead. Whosoever believes in His name will receive remission of sins, and the gift of the Holy Spirit will fall upon all who hear it, including the Gentiles.



אִם נִלְוֶה עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

→ עַתָּה יִשְׁפָּט הַיָּם וְהַיָּבֵשׁ וְהַיָּם וְהַיָּבֵשׁ וְהַיָּם וְהַיָּבֵשׁ וְהַיָּם וְהַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

- אִם נִלְוֶה עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

רַבְרָבִים וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

The great and dreadful day of the LORD (Mal 4:5)		
<p>The wrath of the Lamb (Rev 6:17)</p>	<p>The wrath of the Lord God Almighty (Rev 11:18)</p>	<p>The wrath of God (Rev 15-16)</p>
<p>The LORD of hosts promised to send Elijah the prophet before the coming of the great and dreadful day of the LORD (Mal 4:5), which is the great day of the wrath of the Lamb</p>	<p>The Gentile nations are angry as the wrath of God has come, and they (the dead) will be judged. But the servants the prophets and the holy saints will be rewarded</p>	<p>The 1st rapture harvest for the 144,000 (Rev 14:1-5) and the 2nd rapture harvest for the Holy saints (Rev 14:14-16) are completed before The 7 vials of the wrath of God was poured out (Rev 16)</p>

3 - וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

• **רַבְרָבִים וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ**
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

→ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

- **רַבְרָבִים וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ**
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

→ אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

→ אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

⁵¹¹ אִם עִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ
 רַבְרָבִים וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ וְעִם הַיָּם וְעִם הַיָּבֵשׁ

עֵצָה סְרָאָה 1 וְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה 3 אֵלֶּיךָ (סְרָאָה 7) דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ
מְסַרְסָרָה (אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה).

(וַיִּבְרָא 5-12:4) אֵלֶּיךָ (סְרָאָה 144,000) (The 144,000).

וַיִּבְרָא 12:4 אֵלֶּיךָ מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ אֵלֶּיךָ אֵלֶּיךָ (סְרָאָה 1093) אֵלֶּיךָ
עֵצָה סְרָאָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ
אֵלֶּיךָ מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ 5043 אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ.

וַיִּבְרָא 12:4 אֵלֶּיךָ (עֵצָה סְרָאָה וְסַרְסָרָה) דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה (3/1). **עֵצָה סְרָאָה וְסַרְסָרָה** אֵלֶּיךָ
אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ.

אֵלֶּיךָ עֵצָה סְרָאָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ
דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ.

עֵצָה סְרָאָה וְסַרְסָרָה?

אֵלֶּיךָ 66:7 אֵלֶּיךָ (אֵלֶּיךָ) וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ, אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה.

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ (אֵלֶּיךָ) 2145 אֵלֶּיךָ.

אֵלֶּיךָ 66:8 אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ? דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ?

שְׂרָאָה... **אֵלֶּיךָ 66:8** אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ? סְרָאָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ?

אֵלֶּיךָ אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ (אֵלֶּיךָ) 1121 אֵלֶּיךָ.

וְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה? אֵלֶּיךָ 536

מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ (אֵלֶּיךָ) אֵלֶּיךָ (אֵלֶּיךָ) אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ, 'ādam' (אֵלֶּיךָ H119), אֵלֶּיךָ 119 אֵלֶּיךָ אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ,

אֵלֶּיךָ... H127. (H127) אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ, "ādam" (Strong's H119). 119 אֵלֶּיךָ.

→ אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ ay

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה?

דָּרָךְ 4:1 אֵלֶּיךָ... אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ... אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ...

דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ. אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ.

→ אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

דָּרָךְ 3 מְסַרְסָרָה וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

אֵלֶּיךָ וְסַרְסָרָה אֵלֶּיךָ

536 [a-12] אֵלֶּיךָ & וְסַרְסָרָה, "סְרָאָה"

➤ **سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا** ⁵³⁹ أَي خَيْرِي لِحَقِّهِ أَيْ جَسْرُوسٌ خَيْرٌ نَسَبًا، أَي أَلْفِي سَعْدٌ أَسْرَدْتُ سَعْدِي دَسْرَدًا وَ
(يُؤْتِي 4:26). أَلْسُنُهُ دَسْرَدٌ، أَلْسُنُهُ زَيْدٌ وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا".

فِي 12:5 أَيْ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا".
وَعَبْرَانَسٌ لَمَعْرُوفٌ (أَسْرَدْتُ) لَمَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا":
أَيْ دَسْرَدٌ لَمَعْرُوفٌ 5043 دَسْرَدٌ خَيْرٌ نَسَبًا (رَمَزِي) 726 دَسْرَدٌ 4314 مَوْلَاهُ، أَيْ دَسْرَدٌ لَمَعْرُوفٌ خَيْرٌ نَسَبًا.

فِي 12:5 أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا".
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.
أَلْفِي سَعْدٌ أَسْرَدْتُ سَعْدِي دَسْرَدًا وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا":
أَيْ دَسْرَدٌ لَمَعْرُوفٌ 5043 دَسْرَدٌ خَيْرٌ نَسَبًا (رَمَزِي) "دَسْرَدٌ" دَسْرَدٌ. أَلْفِي سَعْدٌ أَسْرَدْتُ سَعْدِي دَسْرَدًا وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا".

• **عَدْوَالٌ لَمَعْرُوفٌ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا)؟**

→ **دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا)** أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ جَاهِلٌ مَعْرُوفٌ زَيْدٌ جَزْأً وَرَسْمُهُ دَسْرَدٌ وَرَسْمُهُ لَمَعْرُوفٌ "سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا".
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ. أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.

→ **دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا)** أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 دَسْرَدٌ.

→ **دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...**
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...
أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...

⁵⁴² أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ... (فِي 27:2-26).

⁵³⁹ [1-6] أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...
⁵⁴⁰ (فِي 5-12:4) أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...
⁵⁴¹ أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...
⁵⁴² أَيْ دَسْرَدٌ زَيْدٌ (سَدُوعْمَرِيُّ خَيْرٌ نَسَبًا) 144,000 ...

The earth & The ground

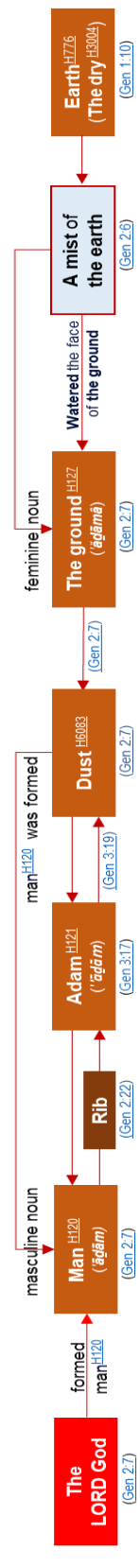
The heaven and the earth^{H776} is God's creation in the beginning. (Gen 1:1) and God called the dry^{H3004} land Earth^{H776}. (Gen 1:10). Before the LORD God formed man of the dust of the ground, the ground (āḡāmā)^{H127} was already watered by a mist^{H103} from the earth^{H776} (Gen 2:6).
 → Meaning, after the ground^{H127} was cursed by the LORD God (Gen 3:17), the earth^{H776} has lost the mist^{H103} (Gen 2:6)
 → It was the ground (āḡāmā)^{H127} that was cursed, not the earth (eres), the dry land^{H3004} yḥṣṣ which was God's creation in the beginning.
 → Which is why the treasure of the kingdom of heaven could be hidden in earthen field (or in the world) for man^{H120} to fill and find it (1Co 2:7).
 "The kingdom of heaven is like unto treasure hid in a field. (Mat 13:44), the field is the world. (Mat 13:38).
 (We speak the wisdom of God in a mystery, even the hidden wisdom, which God ordained before the world/perpetuity of time of the world). (1Co 2:7)
 → God is a spirit (Jm 4:24) and the LORD God is holy (Lev 19:2), and he which hath called you is holy (1Pe 1:15), and he that is called, being free, is Christ's servant (1Co 7:22).
 → The Holy Spirit is the spirit of God in Christ, and God is present in Christ as one (Jm 17:23)
 → "I will give thee the treasures of darkness, and hidden riches of secret places, that thou mayest know that I, the LORD, which call thee by thy name, am the God of Israel." (Isa 45:3)

Col 2:1 For I would that ye knew what great conflict I have for you, and for them at Laodicea, and for as many as have not seen my face in the flesh.
 That their hearts might be comforted, being knit together in love, and unto all riches of the full assurance of understanding, to the acknowledgement of the mystery of God, and of the Father, and of Christ. (Col 2:2) In whom (Christ) are hid all the treasures³²⁴⁴ of wisdom and knowledge. (Col 2:3)

If Christ is holy, how can we have this heavenly treasure (wisdom & knowledge) in earthen vessels (or vessels that is of earth) (2Co 4:7)?
 → It is possible because Christ Jesus came into the world to save sinners (1Ti 1:15). In him we live, and move, and have our being (Act 17:28).
 → Hereby know we that we dwell in him, and he in us, because he hath given us of his Spirit (1Jo 4:13)
 → Because we have this treasure in earthen vessels, it is impossible for us to have the heavenly treasure unless we dwell in Christ, which ascertains that the excellency of the power is of God, and not of us (2Co 4:7).

The ground (āḡāmā)^{H127} G1093

The ground (נֹחַדָּה, Strong's H127)^{H127} is feminine noun and is transliterated as "āḡāmā", and it has its etymology of a verb form, "āḡam" (נָחַדָּה, Strong's H119),^{H119} meaning "red".
 → The proper masculine noun āḡām (נָחַדָּה, Strong's H121) is the same as the masculine noun āḡām (נָחַדָּה, Strong's H120), which is from Strong's H119.



The LORD said to Moses in Exo 3:5, "Put off thy shoes from off thy feet, for the place whereon thou standest is holy ground."^{H127}
 Then the same scripture is quoted in Act 7:33, "Put off thy shoes from thy feet: for the place where thou standest is holy ground."^{G1093}
 → In Luk 8:27, however, the ground (Strong's G1093) is mostly translated as "the earth." According to Exo 3:5 and Act 7:33, the earth (Strong's G1093) from Matthew 6:10, "Thy kingdom come. Thy will be done in earth,^{G1093} as it is in heaven," should also be translated as "ground". "Thy kingdom come. Thy will be done (on) ^{G1982} (ground),^{G1982} as it is in heaven."

What is the significance of correctly interpreting ground (āḡāmā)^{H127} G1093 as "ground"?
 → The ground^{H127} was cursed by the LORD God (Gen 3:17), the earth^{H776} has lost the mist^{H103} and the sin entered into the world (Rom 5:12).
 → Because the sin entered through the cursed ground of the dry earth, Christ Jesus came into the world to save sinners (1Ti 1:15) from the cursed ground (or grave which is set in the sides of the pit). (Eze 32:23).
 Therefore, the meaning of "Thy kingdom come. Thy will be done (on) ^{G1989} (ground),^{G1989} as it is in heaven. (Mat 6:10)" should be interpreted as follows:

The Lord (āḡōnāy)^{H136} GOD (yḥōvāh)^{H369} to cause the sinners to come up out of their graves and bring them (God's) people Israel, (2Sa 7:23) into holy ground of Israel (Eze 37:12), and they will become the first-fruits at Christ's coming (1Co 15:23)
 And call no man your father upon the earth (ground)^{G1982} for one is your Father, which is in heaven (Mat 23:9).

The Lord's prayer #1 His will
 Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name (Mat 6:9)
 Thy kingdom come. Thy will be done (on the cursed) ground^{G1989} on earth (to bring your people Israel to holy ground) as it is in heaven (Mat 6:10).

עֵשֶׂת יָמִים 70 וְשֵׁבַע יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע?

→ "זֵכַר הַשָּׁבָע שֶׁבַע יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע וְלֹא תִשְׁכַּח אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע" (ז' ע"ב 7:25)
 (ספר ז'מ"ט) **אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 70 וְשֵׁבַע יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע** 7 אֲרֵבָה 559

ע"פ 9:24 עֵשֶׂת יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (70) יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע
 תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע
 תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

עֵשֶׂת יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (70) יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע... [H6944 מ"ו](#)

ז' 25:8 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (7) . **שְׁמַרְתֶּם אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע... אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע** 8141 מ"ו

יָמִים (7) אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (7) . **אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע** 8141 מ"ו

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (7) . **שְׁמַרְתֶּם אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע... אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע** 8141 מ"ו

עֵשֶׂת יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (40) אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (9) . **אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע** 8141 מ"ו

• **70 יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע & 7 יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (9:24)**

• **אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 = אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 = 49 (7 x אֲרֵבָה) אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (ז' 25:8)**

→ 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 49 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע, 1 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 1 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

עֵשֶׂת יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע (1 יָמִים) 1 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה 560

* אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע [3] תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 70 יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

Tribulation		Great Tribulation			Armageddon
Daniel's 1st half of 70th week		Daniel's 2nd half of 70th week			
(John is partakers in Tribulation with his brethren, Rev 1:9)		Abomination (AOD)	The hour of temptation (Rev 3:10)	Wrath of God (Rev 16)	
1,260 days		250 days	790 days	250 days	
Time (feast), Times (feasts), & the dividing (midst) of time (Dan 7:25, Dan 12:7)					
Feast (of Passover, Unleavened, Firstfruits)		The midst of the feast		Feasts (of Trumpet, Atonement, Tabernacles)	
3 1/2 years (Christ's 1st coming for the Gentile nations & the Jews)		The 1st rapture will occur at the end of the Tribulation (Mat 24:29-36)		3 1/2 years (The Jews & the remnants come in the name of the Lord, Mat 21:9, Rev 12:17)	

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע & עֵשֶׂת יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

ע"פ 4:19 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

ע"פ 4:20 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע [H772](#)

558 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

559 [1-13] אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 7 אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

560 [3] תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע 70 יָמִים אֲרֵבָה לְמַעַן תִּשְׁמְרוּ אֶת יְמֵי הַשָּׁבָע

☞ **ወንጌል ስድስት ዓመት 3.5 ክፍል**

ይህ ዓመት ወንጌል ክፍል ስድስት ዓመት ነው። 30 ሰዓት (ጳውሎስ 3:23)፣ ለዚህ ዓመት 3 ዓመት ስድስት ዓመት ነው።

→ (1) ክፍል ስድስት ዓመት... (ጳውሎስ 2:13-25)፣ (2) ክፍል ስድስት ዓመት... (ጳውሎስ 5:1)፣ (3) ክፍል ስድስት ዓመት... (ጳውሎስ 4:6)፣ ለዚህ

(4) ክፍል ስድስት ዓመት... (ጳውሎስ 12:1)፣ ለዚህ ክፍል ክፍል ስድስት ዓመት ነው።

→ ለዚህ ዓመት ወንጌል ስድስት ዓመት ነው። 3.5 ሰዓት ስድስት ዓመት ነው።⁵⁶⁸

1,290 & 1,335 ትውልድ

(ጳውሎስ 11:31-38 ስድስት ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው።)

ጳውሎስ 11:31 ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

→ ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። 70 ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው።

ክፍል ስድስት ዓመት ነው። 3.5 ሰዓት ክፍል ስድስት ዓመት ነው።

ወንጌል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ወንጌል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

• **ወንጌል ስድስት ዓመት** (dy for the resurrection of the dead) ነው። ስድስት ዓመት ነው።

• **ወንጌል ስድስት ዓመት** ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ወንጌል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ስድስት ዓመት ነው። $1,290 = 30 + 1,260$ (ትውልድ) ነው።⁵⁶⁹

ጳውሎስ 12:11 ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

→ ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

45 ትውልድ) ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ጳውሎስ 12:12 ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ወንጌል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ጳውሎስ 11:32 ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

ለዚህ ዓመት ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

⁵⁶⁸[3] ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

www.therhemaofthelord.com/the-7-feasts-of-the-lord/10 - ትውልድ ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

⁵⁶⁹[3] ክፍል ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው። ስድስት ዓመት ነው።

٤٣:11-13 **٤٣:11-13** ٤٣:11-13 ٤٣:11-13 ٤٣:11-13 ٤٣:11-13
٤٣:11-13 ٤٣:11-13 ٤٣:11-13 ٤٣:11-13 ٤٣:11-13

٤٣:14-15 ٤٣:14-15 ٤٣:14-15 ٤٣:14-15 ٤٣:14-15
٤٣:16-17 ٤٣:16-17 ٤٣:16-17 ٤٣:16-17 ٤٣:16-17
٤٣:18-19 ٤٣:18-19 ٤٣:18-19 ٤٣:18-19 ٤٣:18-19

٤٣:20-21 ٤٣:20-21 ٤٣:20-21 ٤٣:20-21 ٤٣:20-21
٤٣:22-23 ٤٣:22-23 ٤٣:22-23 ٤٣:22-23 ٤٣:22-23

٤٣:24-25 ٤٣:24-25 ٤٣:24-25 ٤٣:24-25 ٤٣:24-25
٤٣:26-27 ٤٣:26-27 ٤٣:26-27 ٤٣:26-27 ٤٣:26-27

→ **٤٣:28-29** ٤٣:28-29 ٤٣:28-29 ٤٣:28-29 ٤٣:28-29

٤٣:30-31 ٤٣:30-31 ٤٣:30-31 ٤٣:30-31 ٤٣:30-31
٤٣:32-33 ٤٣:32-33 ٤٣:32-33 ٤٣:32-33 ٤٣:32-33
٤٣:34-35 ٤٣:34-35 ٤٣:34-35 ٤٣:34-35 ٤٣:34-35

2,300- **٤٣:36-37** ٤٣:36-37 ٤٣:36-37 ٤٣:36-37 ٤٣:36-37

٤٣:38-39 ٤٣:38-39 ٤٣:38-39 ٤٣:38-39 ٤٣:38-39
٤٣:40-41 ٤٣:40-41 ٤٣:40-41 ٤٣:40-41 ٤٣:40-41

٤٣:42-43 ٤٣:42-43 ٤٣:42-43 ٤٣:42-43 ٤٣:42-43

٤٣:44-45 ٤٣:44-45 ٤٣:44-45 ٤٣:44-45 ٤٣:44-45
٤٣:46-47 ٤٣:46-47 ٤٣:46-47 ٤٣:46-47 ٤٣:46-47

٤٣:48-49 ٤٣:48-49 ٤٣:48-49 ٤٣:48-49 ٤٣:48-49

٤٣:50-51 ٤٣:50-51 ٤٣:50-51 ٤٣:50-51 ٤٣:50-51
٤٣:52-53 ٤٣:52-53 ٤٣:52-53 ٤٣:52-53 ٤٣:52-53

٤٣:54-55 ٤٣:54-55 ٤٣:54-55 ٤٣:54-55 ٤٣:54-55

٤٣:56-57 ٤٣:56-57 ٤٣:56-57 ٤٣:56-57 ٤٣:56-57
٤٣:58-59 ٤٣:58-59 ٤٣:58-59 ٤٣:58-59 ٤٣:58-59

٤٣:60-61 ٤٣:60-61 ٤٣:60-61 ٤٣:60-61 ٤٣:60-61
٤٣:62-63 ٤٣:62-63 ٤٣:62-63 ٤٣:62-63 ٤٣:62-63

٤٣:64-65 ٤٣:64-65 ٤٣:64-65 ٤٣:64-65 ٤٣:64-65
٤٣:66-67 ٤٣:66-67 ٤٣:66-67 ٤٣:66-67 ٤٣:66-67

٥70 31. "٤٣:31-32" www.therhemaofthelord.com/uncategorized/31-**٤٣:31-32** ٤٣:31-32 ٤٣:31-32 ٤٣:31-32 ٤٣:31-32

12- دَسَدَرُوْرِي دَسَرُو

عَسَر 4:28 دَر زِيَر لَوَل اِي سَر وَ لَوَل سَر سَر عَسَرِي قَسَرِي دَر لَوَل

عَسَر 4:29 وَ لَوَل سَر دَر سَر (12). دَسَدَرُو

اَسَر رِي سَرِي عَسَرِي سَر عَسَرِي (قَرِي) كَرُو. ¹⁹⁶⁵ وَ لَوَل عَسَرِي لَوَل لَوَل

عَسَر 4:30 عَسَرِي قَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

دَر لَوَل سَر سَر لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَر عَسَرِي عَسَرِي عَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

عَسَر 4:31 لَوَل... ⁴⁴⁰⁶ عَسَرِي قَسَرِي اَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَر وَ لَوَل سَر سَر عَسَرِي قَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

→ دَسَدَرُوْرِي زِيَر قَسَرِي عَسَرِي قَسَرِي دَر لَوَل اِي 12 دَسَدَرُوْرِي قَسَرِي لَوَل

وَ لَوَل دَر سَر سَر (12). دَسَدَرُو

"12 دَسَدَرُو" دَسَدَرُو 2016 وَ لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

لَوَل سَر اَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَدَرُو 2:12 دَر زِيَر لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَدَرُو عَسَرِي عَسَرِي اَسَرِي لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَدَرُو (اَسَدَرُو) ¹⁸⁸¹ اَسَدَرُو سَر سَر سَر سَر

(اَسَدَرُو لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

اَسَدَرُو سَر سَر لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

• قَسَر لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

(زِيَر زِيَر 29:39), اَسَدَرُو لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

(زِيَر زِيَر 29:41). ⁵⁹⁵

→ عَسَرِي عَسَرِي عَسَرِي قَسَرِي قَسَرِي 6 دَر لَوَل لَوَل

لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

عَسَر لَوَل لَوَل

وَ لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

→ اَسَدَرُو لَوَل لَوَل 12 دَسَدَرُو اَسَدَرُو لَوَل لَوَل لَوَل

وَ لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

- "12 دَسَدَرُو" (اَسَدَرُو 2:12) "ي رِي سَر اَسَرِي

"اَسَدَرُو لَوَل لَوَل لَوَل" 7 وَ لَوَل عَسَرِي لَوَل لَوَل

سَر دَر زِيَر لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل ⁵⁹⁶

⁵⁹⁵ (زِيَر 6:5-6) 3 وَ لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل

⁵⁹⁶ اَسَدَرُو لَوَل لَوَل لَوَل لَوَل 17:11

Steps of Creation

Heb 11:3 records, "Through faith, we understand that the worlds were framed by the word of God" and there are three distinctions as to how God "framed" the heaven and the earth. According to Genesis 1, the word of God is framed into three different forms: things that were **Created**, **Made (done)**, and **to bring forth**.

God Created

- **Heaven & Earth** the heaven and the earth
 - **Great whales (dragon)** that moves
 - **Winged fowl** after his kind
 - **Man** in God's own image
 - **Male & Female**
- In the beginning, "God Created" the heaven and the earth.
- On the 5th day of His creation, God created **great whales (dragon)** and **living** that moves (which the waters brought forth abundantly), and every **winged fowl** after his kind.
 - Then on the 6th day, God created **man** in His own image (male and female).

God Made (do)

- **The firmament**
 - **The greater/lesser light**
 - **Tree** yielding (making) fruit
 - **The beast (life)** of the earth, cattle, creeping things upon the earth/ground
 - **Man** in our image, after our likeness
- The things that "God Made" are the firmament, Heaven, the greater/lesser light, Tree, making fruit, But before God created man, God said, "Let us make man in our image, after our likeness, as if He was with someone before making things together.
- Then God created man in His own image (male and female) to let them have dominion over the fish of the sea, and over the fowl of the air, and over the cattle, and over all the earth, and over every creeping thing upon the earth.

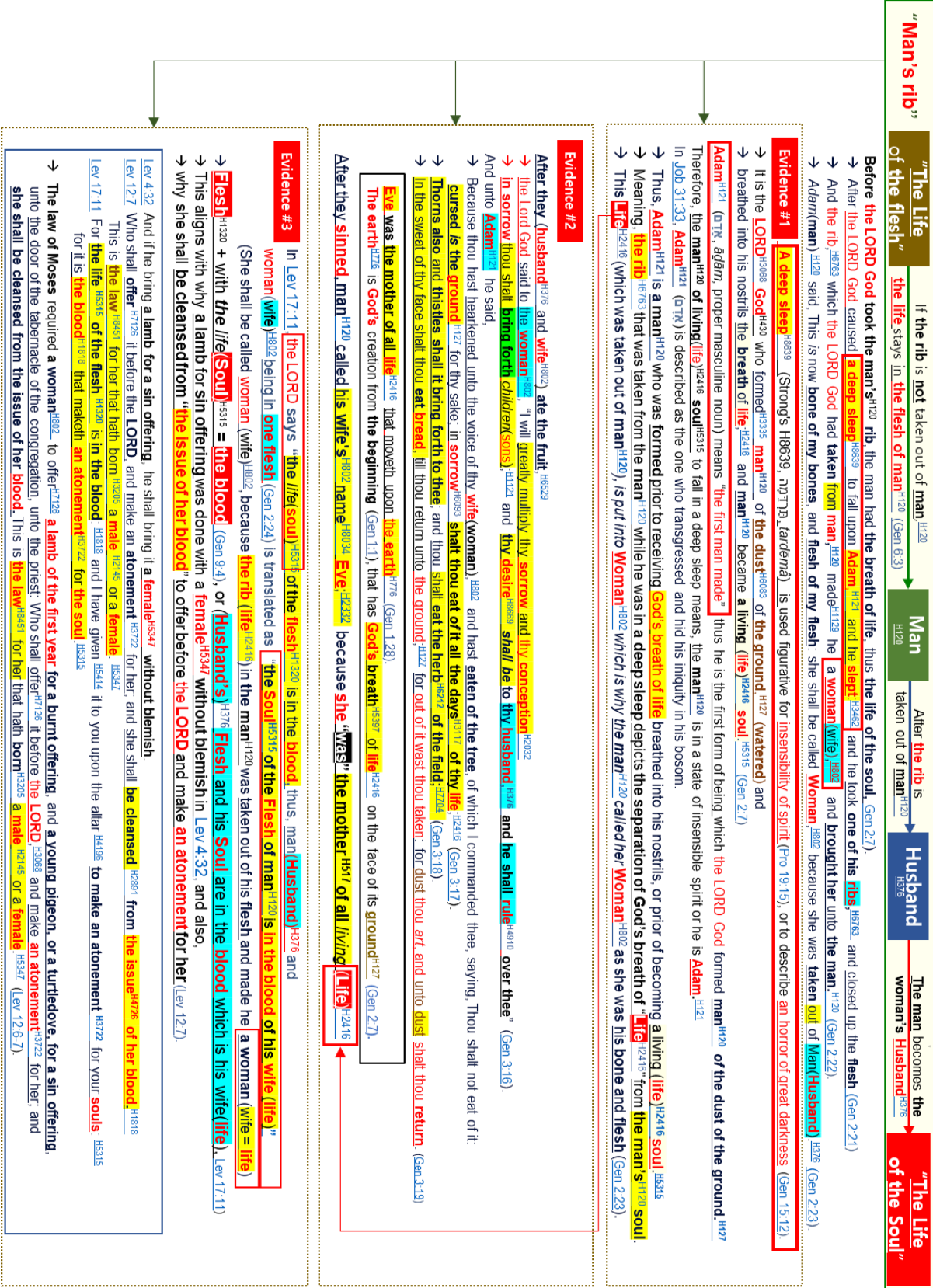
These are the things that God created and made.

Then, God commanded the earth to bring forth grass, and waters to bring forth creeping things, and (as a result), the earth can bring forth the (life).

God said, Bring forth

- Let the Earth bring forth grass, and waters to bring forth creeping things, and (as a result), the earth can bring forth the (life).
 - Let the Earth bring forth abundantly moving creatures, life of the earth, and over all the earth, and over every creeping thing upon the earth.
 - Let the Earth bring forth the life, and over all the earth, and over every creeping thing upon the earth.
- But before making a man, God said the earth and waters to bring forth the following things abundantly:
- "Let the Earth bring forth grass, and waters to bring forth the following things abundantly."
 - "Let Waters bring forth abundantly moving creatures (creeping things), life of the earth, and over all the earth, and over every creeping thing upon the earth."
 - "Let the Earth bring forth the life, and over all the earth, and over every creeping thing upon the earth."

Man's rib & One flesh



				- لا سڙي سڙي - سڙي سڙي - اڙي سڙي سڙي	ڪڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 8:22) 4 سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي اڙي سڙي سڙي سڙي 4 سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 8:22; 8:8)
4	سڙي سڙي سڙي سڙي H554 سڙي سڙي (ع 6:7 اڙي)	اڙي سڙي سڙي اڙي	4 سڙي سڙي سڙي (سڙي سڙي - اڙي) سڙي سڙي	10 سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 7:7)	4 سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 7:7) - سڙي سڙي سڙي سڙي & سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 7:19) 10 سڙي سڙي سڙي (ع 20، 7:7، 24-7) سڙي
		اڙي سڙي سڙي اڙي سڙي سڙي اڙي	4 سڙي سڙي سڙي (سڙي سڙي - سڙي) سڙي سڙي سڙي (ع 8:23)	سڙي سڙي سڙي (1 سڙي سڙي سڙي سڙي... سڙي سڙي سڙي سڙي 660 سڙي (ع 7:20) سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 7:24، 661)	سڙي سڙي سڙي (ع 8:9) - سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 8:9) سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 8:10) سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (ع 8:23) - سڙي

659 [ع 4-13] سڙي سڙي سڙي "اڙي سڙي سڙي سڙي سڙي
 660 سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي (سڙي سڙي سڙي سڙي) سڙي سڙي سڙي سڙي سڙي 13 & 17 سڙي
 661 [ع 4-13] سڙي سڙي سڙي سڙي "اڙي سڙي سڙي سڙي سڙي"

					<p>רָפוּי־סֵוֹאֵת סְרַחֲוֹתָוּ עֵשׂר׃ 24 (8): - אִשֵּׁי אִבְיָיָה דָּלַעַרְוֹתָוּ מְסֻסֵּוֹתָוּ מִרְסָוּוֹ. אִבְיָ אִשֵּׁי רַבִּי עָוֹ, סְדֻרְוֹתָוּ מִלְּבָבָהּ אִבְיָ מִלְּבָבָהּ מְסֻסָוּוֹ. אִבְיָ אִשֵּׁי אִבְיָ מְסֻ מְסֻסָוּוֹ מִרְסָוּוֹ עֵשׂר׃ 25 (8):</p>
--	--	--	--	--	--

1 וְסַרְוֹתָוּ=1 וְסַרְוֹתָוּ

עֵשׂר׃ 4:7 מְסֻסָוּוֹ מִרְסָוּוֹ **עֵשׂר׃ 1744** אִבְיָ מִסְרָוֹתָוּ מְסֻסָוּוֹ מִרְסָוּוֹ
 אִשֵּׁי מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ, מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 אִבְיָ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

1 • וְסַרְוֹתָוּ=1 וְסַרְוֹתָוּ

אִשֵּׁי מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 אִבְיָ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 → 1 וְסַרְוֹתָוּ=1 וְסַרְוֹתָוּ ⁶⁶²

2 וְסַרְוֹתָוּ=2 וְסַרְוֹתָוּ

עֵשׂר׃ 5:7 אִבְיָ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 אִשֵּׁי מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

2 • וְסַרְוֹתָוּ=2 וְסַרְוֹתָוּ

- אִבְיָ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 אִבְיָ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

→ 2 וְסַרְוֹתָוּ=2 וְסַרְוֹתָוּ

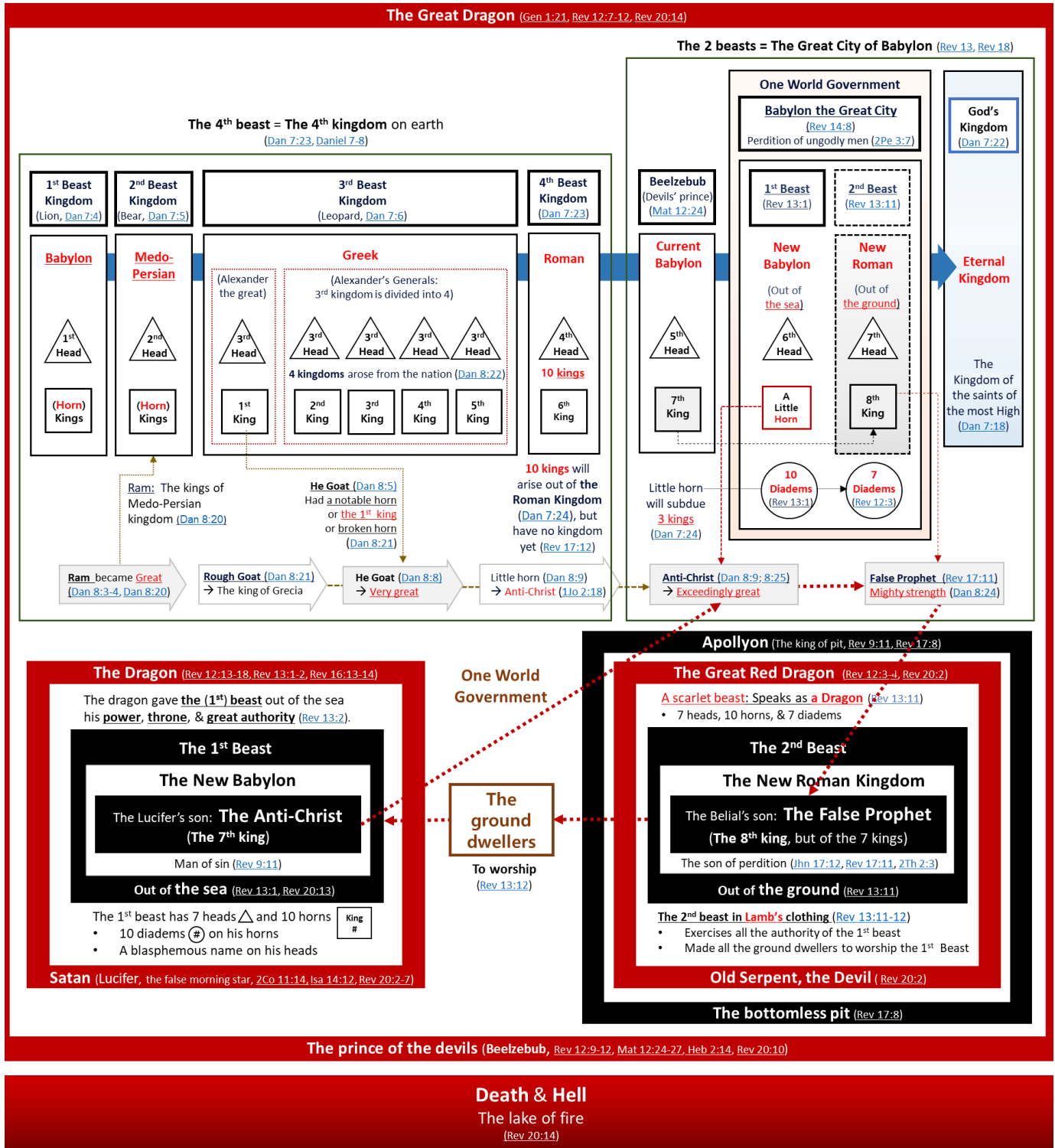
→ 3 מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

- מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

⁶⁶² 1 וְסַרְוֹתָוּ=2 וְסַרְוֹתָוּ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
⁶⁶² 2 וְסַרְוֹתָוּ=2 וְסַרְוֹתָוּ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
 מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ
⁶⁶³ [עֵשׂר׃ 13-3] מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ מְסֻסָוּוֹ

		<p> <u>أَرِزْتُمْ</u> (وَدَيُّكُمْ فِرْعَوْنُ جِرْسُ، <u>وَيْر 13:3</u>) اَلْأَنْبِيَاءُ لَعْنَةُ <u>عَمْرِي سِر</u> <u>أَقْرَبُ</u> اَلْحَرْبِ عَمْرِي سِر جِرْسُ <u>1</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u>؛ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ <u>أَلْأَنْبِيَاءُ</u> (1 <u>وَسِر</u>) فِرْعَوْنُ، وَتَدْرُسُ فِرْعَوْنُ، "أَلَيْسَ نَأْ (1 <u>وَسِر</u>) <u>فِرْعَوْنُ</u>؟ اَلْحَرْبُ زَسْرِي عَمْرِي لَعْنَةُ اَلْأَنْبِيَاءُ؟" (<u>وَيْر 4:13</u>). </p> <p> <u>فِرْسُ</u> (<u>عَمْرِي سِر</u>) 2 <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> عَمْرِي سِر اَلْأَنْبِيَاءُ اَلْأَنْبِيَاءُ <u>سِرْفَوْنُ</u> اَلْ (وَعَمْرِي سِر) عَمْرِي سِر، اَلْأَنْبِيَاءُ اَلْأَنْبِيَاءُ <u>اَلْحَرْبُ</u> اَلْحَرْبُ (<u>عَمْرِي سِر</u>) عَمْرِي سِر. جِي سِر وَدَيُّكُمْ فِرْعَوْنُ <u>جِرْسُ</u>، اَلْحَرْبُ سِر جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ جِرْسُ <u>فِرْعَوْنُ</u> (<u>عَمْرِي سِر</u>) 2 <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> اَلْحَرْبُ عَمْرِي سِر <u>فِرْعَوْنُ</u>... (<u>عَمْرِي سِر</u>) (<u>وَيْر 8:17</u>). </p> <p> <u>2</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> (كِرِي سِر اَلْحَرْبُ جِرْسُ) <u>سِرْفَوْنُ</u> <u>سِرْفَوْنُ</u>. </p> <p> <u>2</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> 2 <u>أَسِر</u> اَلْحَرْبُ <u>جِرْسُ</u> اَلْحَرْبُ <u>وَدَيُّكُمْ فِرْعَوْنُ</u> جِرْسُ سِر اَلْحَرْبُ، <u>وَيْر 19:20</u>) اَلْحَرْبُ <u>أَلْأَنْبِيَاءُ</u> اَلْحَرْبُ <u>19</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> (اَلْحَرْبُ) اَلْحَرْبُ <u>جِرْسُ</u> اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ، وَدَيُّكُمْ فِرْعَوْنُ <u>اَلْحَرْبُ</u>... اَلْحَرْبُ <u>1</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> (<u>وَيْر 11:12-13</u>). </p> <p> <u>2</u> <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> (كِرِي سِر اَلْحَرْبُ جِرْسُ) اَلْحَرْبُ <u>سِرْفَوْنُ</u>، اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ <u>اَلْحَرْبُ</u> اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ <u>13:13</u> (<u>وَيْر 44</u>). </p> <p> <u>اَلْحَرْبُ</u> <u>سِرْفَوْنُ</u> اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ (2 <u>وَسِر فِرْعَوْنُ</u> كِرِي <u>سِرْفَوْنُ</u>) (1 <u>وَسِر</u>) فِرْعَوْنُ اَلْحَرْبُ (اَلْحَرْبُ) اَلْحَرْبُ <u>سِرْفَوْنُ</u> (اَلْحَرْبُ) اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ، وَدَيُّكُمْ <u>فِرْعَوْنُ</u> جِرْسُ سِر اَلْحَرْبُ، وَدَيُّكُمْ فِرْعَوْنُ جِرْسُ <u>سِرْفَوْنُ</u>، اَلْحَرْبُ (اَلْحَرْبُ) <u>2</u> <u>وَسِر</u> <u>فِرْعَوْنُ</u> (اَلْحَرْبُ) اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ اَلْحَرْبُ <u>اَلْحَرْبُ</u> (<u>وَيْر 14:13</u>). </p>
--	--	---

			<p>هت عير زى قيس لاس و ع لاس قه ايو... الله 2316 مؤ عير 1519 نم عير دى قيس ايو (اسر عير ايو لاس و قير 4:8). د لاس و قير (اسر قير 286). زير ايو قير قيس د لاس و قير د قير ع د لاس و قير 677.</p>
--	--	--	---



فیر 17:9) 7 و (7 عرسداس) = 7 فیرت

- ائسز سیرز ائیر سقرئ سز ائسز 7 و 7 فیرت

فیر 17:9) ائیر جئی سئس عئو³⁵⁶³ ائیر ائو فیرت و فیرت ائو

ا ئو فیرت و فیرت ائو، ائو فیرت ائو ائسز سیرز ائیر سقرئ سز ائو

فیر 17:9) "جیر ائو فیرت و فیرت ائو سئس عئو

ا ئو (7) فیرت و فیرت ائو، ائو فیرت و فیرت ائو سئس عئو

→ ائو ائسز سیرز (فیرت و فیرت ائو) ائیر سقرئ سز ائسز... 7 فیرت... 7 فیرت (7 عرسداس، فیرت 7:23).

فیر 17:10) 7 عرسداس و فیرت ائو سز 5 عرسداس و فیرت ائو، 6 و سز عرسداس و فیرت ائو سز ائو، ائیر 7 و سز عرسداس و فیرت ائو سز ائو و سز ائو
فیرت ائو

فیر 17:10) ائو فیرت (7 عرسداس و فیرت ائو)

ا ئیر ائسز ائو سز ائو فیرت ائو ائیر سقرئ سز ائو

فیر 17:10) ائو فیرت (7) عرسداس و فیرت ائو (ائو فیرت و فیرت ائو) ائیر سقرئ سز ائو (فیرت 13:1، فیرت 17:9)،

فیرت (5 عرسداس و فیرت ائو) و فیرت ائو، ائیر ائو (فیرت عرسداس و فیرت ائو) عرسداس و فیرت ائو،

ا ئیر ائو (ا ئو فیرت عرسداس و فیرت ائو) ائیر ائو سز ائو

ا ئو ائو (ا ئو فیرت عرسداس و فیرت ائو) ائیر سز ائو، ائیر سز ائو سز ائو فیرت ائو

→ سز: ائیر سز و فیرت فیرت و فیرت ائو سز ائو فیرت ائو و فیرت ائو و فیرت ائو سز ائو فیرت ائو سز ائو

جیرت 60 ائو فیرت ائو فیرت ائو، جیرت ائو سز ائو سز ائو فیرت ائو سز ائو فیرت ائو و فیرت ائو

عرسداس و فیرت ائو...

عیرت عرسداس و فیرت ائو

- ائیر سز عرسداس و فیرت ائو فیرت ائو سز ائو ائیر سز عرسداس و فیرت ائو

(فیرت 8:21) فیرت ائو سز ائو فیرت ائو

فیرت ائو فیرت ائو

7- عرسداس⁷⁴⁴

1 و فیرت ائو

2 جیرت-فیرت ائو

3 ائیر سز ائو

4 عرسداس و فیرت ائو

5 جیرت و فیرت ائو

6 ائو فیرت ائو

7 ائو فیرت ائو

⁷⁴⁴[4-13] فیرت و فیرت ائو "ا ئیر سز ائو فیرت ائو"

أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ
أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

→ "سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ" 8 عَرَبِيَّةٌ مُؤَكَّدَةٌ بِمَعْنَى عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ، أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

وَسَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ 7 عَرَبِيَّةٌ مُؤَكَّدَةٌ بِمَعْنَى عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ، أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

→ هَاتَا 2 وَسْمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ (أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ)، أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

→ هَاتَا 2 وَسْمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ (أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ)، أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

2:3 أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

2:4 أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

→ تَمَّ بِهَذَا قَوْلُ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَدْعُونَنِي إِلَى عِبَادَةِ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُوَ يُدْعَى عَلَيْهِ تَكْفِيرًا تَكْفِيرًا

أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

→ أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا نَارَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آيَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَنَجَّى مَوْلَانَا إِسْمَاعِيلَ إِذْ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَدَّاهُمْ لَا يَخَافُونَ

["قَدْ 4-13] وَتَدْعَى عَلَيْهِ "إِسْمَ سُبْحَانَ" (إِسْمَ سُبْحَانَ)

750 رَدُّهُ قَوْلُهُ

751 "وَتَدْعَى عَلَيْهِ" كَمَا تَدْعَى عَلَيْهِ "إِسْمَ سُبْحَانَ" (إِسْمَ سُبْحَانَ) 6-17:3

752 ["قَدْ 4-13] وَتَدْعَى عَلَيْهِ "إِسْمَ سُبْحَانَ" (إِسْمَ سُبْحَانَ)

753 "44" بِمَعْنَى تَدْعَى عَلَيْهِ (2) (إِسْمَ سُبْحَانَ) 1. "www.therhemaofthelord.com/uncategorized/44" - تَدْعَى عَلَيْهِ (2) (إِسْمَ سُبْحَانَ) 1-2

تَدْعَى عَلَيْهِ (2) (إِسْمَ سُبْحَانَ) 1-3

754 ["قَدْ 4-13] وَتَدْعَى عَلَيْهِ "إِسْمَ سُبْحَانَ" (إِسْمَ سُبْحَانَ)

→ אַרְבַּעַת עֶשְׂרִים וְשֵׁשׁ יָמִים אֵלֶיךָ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת...
 (צִוְיָנוּ) ³⁰⁵⁶ מִיָּמֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ
 (צִוְיָנוּ 8:15) אֵת דְּבָרֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ (אֲרַמְאֵל)

וְיִסְמְכוּנוּ

צִוְיָנוּ 8:13 אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 מִיָּמֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

→ אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 מִיָּמֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

צִוְיָנוּ 9:4 אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 מִיָּמֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

→ "עֲרֵי שֵׁנָה" דְּרִשְׁתָּם אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

→ "אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 מִיָּמֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ
 אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ... וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

[צִוְיָנוּ 18-ν] דְּבָרֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

Peter's Rhema

Act 2:14 But Peter, standing up with the eleven, lifted up his voice, and said unto them, Ye men of Judaea, and all ye that dwell at Jerusalem, be this known unto you, and hearken to my **words (rhema)**:^{G4487}

Act 2:15 For these are not drunken, as ye suppose, seeing it is *but* the third hour of the day.

Act 2:16 But this is that which was spoken by the prophet Joel;

Act 2:17 And it shall come to pass **in the last days**, saith **God**, I will pour out of **my Spirit** upon all flesh; and your sons and your daughters shall **prophesy**, and your young men shall see **visions**, and your old men shall dream **dreams**:

Act 2:18 And on my servants and on my handmaidens I will pour out in those days of **my Spirit**; and they shall **prophesy**:

Act 2:19 And I will shew wonders in heaven above, and signs in the earth (**the ground**)^{G1093} beneath; blood, and fire, and vapour of smoke:

Act 2:20 The sun shall be turned into darkness, and the moon into blood, **before** that **great and notable day of the Lord come**:

Act 2:21 And it shall come to pass, *that* **whosoever shall call on the name of the Lord shall be saved**.

→ אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

⁷⁶⁹[a-18] "אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ" www.therhemaofthelord.com/uncategorized/40 - צִוְיָנוּ 4- דְּבָרֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

⁷⁷⁰[a-18] "אֵלֵינוּ יָבִיאוּ אֶת הַבְּרִית הַזֹּאת יְהוָה יְסֻדְנוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ" [2] וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ וְיִסְמְכוּנוּ אֵת אֵלֵינוּ

*[3] "עשרות 70 רצופות" ארבעים ושלשה ימים

Great Tribulation		Armageddon
Daniel's 2nd half of 70th week		
Abomination (AOD)	The hour of temptation (Rev 3:10)	Wrath of God (Rev 16)
250 days	790 days	250 days
The hour of temptation		(1 Hour)
The 7th trumpet (3rd owe) (The 7 vials: The wrath of God)		The Wrath of God (Rev 15-16)
→ The pouring of the 1st - 5th vial		Armageddon
→ The pouring of the 6th vial (Armageddon starts)		
The coming of the Lord Jesus Christ		
→ The pouring of the 7th vial		
The great city Babylon is destroyed (Rev 18:21-24)		

The wrath of God
← The great and notable day of the Lord

וַיְהִי כִּי יָבֹא הַיּוֹם הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל)

וַיְהִי כִּי יָבֹא הַיּוֹם הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 18:21
 וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 18:22
 וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 18:23
 וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 18:24

וַיְהִי כִּי יָבֹא הַיּוֹם הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 18:21
 "וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה"

→ יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה

2) וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל)
 1) וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל)

771 צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל

+ וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 3459
 "וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 3458
 וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 772

וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 11-3-9
 וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 9

771 אֲשֶׁר יִבְרָא וְיִשְׂרָאֵל " 6:10

G3458 - mylos "772 - צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל (kjv). " וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה וְהָיָה יוֹם הַגָּדוֹל הַזֶּה (צִיּוֹן וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל וְיִשְׂרָאֵל) 9 דְּמִיּוֹ, 2023.

https://www.blueletterbible.org/lexicon/g3458/kjv/tr/0-1

فیر 19:6) 4 وِسْرَ اِنزَوْتِ (زَجْرُ لَدَا سَوَعِي اِسْر: دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي عَسَدَاوَسْر نَاعِمَاوَسْر دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو) .

فیر 19:6 اِكْرَ هَجَّ جَزَاوِي اِنزَ فَوْرَسَمَ اِنزَ اَوَسْرَو 4183 اَمِّي سَر اِكْرَ فَرَاوِي جَرَسْرَو 3793 اَمِّي اِكْرَ اِنزَاوِي فَوَسْرِي سَعَاوِي اِنزَ فَوْرَسَمَ، اِكْرَ هَعْمِي كَرِي عَمْرِي اِنزَ فَوْرَسَمَ، " اِنزَوْتِ اَو 3841 اَمِّي عَسَدَاوَسْر نَاعِمَاوَسْرَو .

فیر 19:6 nd اِنزَعْمَسَسْر اَوَسْر، يَ اِنزَعْمِي، ي اِنزَعْمِي 4183 اَمِّي سَر اِكْرَ فَرَاوِي جَرَسْرَو 3793 اَمِّي اِكْرَ اِنزَاوِي فَوَسْرِي سَعَاوِي اِنزَ فَوْرَسَمَ، اِكْرَ هَعْمِي كَرِي عَمْرِي اِنزَ فَوْرَسَمَ، " اِنزَوْتِ اَو 239 اَمِّي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَوَسْر نَاعِمَاوَسْرَو " .

➤ 4 وِسْرَ اِنزَوْتِ اَو: سَوَعِي وِسْرَ اِنزَوْتِ فَوْرَسَمَ .

نَاعِمَاوَسْرِي اِنزَوْتِ اَوَسْرَو جَرَسْرِي اِنزَ، 144٠000 جَرَسْرِي، هَجَّ فَوَسْرَو فَرَاوِي سَر هَسْرَسْرَا، 24 دَسَدَاوَسْرَسْرَا، 4 فَرَسْرَ دَرَسْرِي سَرَسْرَا، دَوْرَاوَسْر (فیر 4-10:1) ، هَسْرَسْرَا فَرَسْرَا،
➔ اِنزَوْتِ اَو! اِنزَوْتِ اَوَسْرِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَوَسْر نَاعِمَاوَسْرَا

➤ دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو

➔ دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو اِنزَاوِي، زَسْرَو، اِكْرَ زَسْرَو، اِكْرَ اِنزَسْرَسْرَا هَجَّ دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو (فیر 4:8) ، اِكْرَ اَللّٰهُ (نَاو " و " اِنزَاوِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو، 2 اِنزَاوِي 5:19) " اِنزَاوِي " اِنزَاوِي سَر اِنزَاوِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو اِكْرَ سَر دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو

اِنزَاوِي فَوَسْرَو (دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي فَوَسْرَو جَرَسْرَاو)

هَسْرَسْرَا فَوَسْرَو اِنزَاوِي سَرَسْرَا، " اِنزَاوِي سَرَسْرَا 14:9) سَرَسْرَا... نَاعِمَاوَسْرِي، نَاعِمَاوَسْرِي اَللّٰهُ " نَاعِمَاوَسْرِي هَسْرَسْرَاو فَوَسْر " اِنزَاوِي

اِنزَاوِي سَرَسْرَاو نَاعِمَاوَسْرِي، اِنزَاوِي سَرَسْرَا...

وَسْر اِنزَاوِي جَسْرَو سَرَسْرَاو (فیر 21:3) ..

➔ اِكْرَ... نَاعِمَاوَسْرِي وِسْر عَسَدَاوَسْر نَاعِمَاوَسْرِي 781

(فیر 19:7) نَاعِمَاوَسْرِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو

فیر 19:7 اِنزَاوِي سَر اِنزَاوِي سَرَسْرَاو (اِنزَاوِي وِسْرَو) 5463 اَمِّي اِكْرَ اِنزَاوِي سَرَسْرَاو 41 اَمِّي سَرَسْرَاو (سَدَاوَسْرِي) كَرَاوَسْرَو 1391 اَمِّي اِنزَاوِي سَرَسْرَاو:

نَاعِمَاوَسْرِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو 1062 اَمِّي فَوَسْرَو (arnion) ي 721 اَمِّي اِنزَاوِي اِنزَاوِي،

اِكْرَ اِنزَاوِي اِنزَاوِي سَرَسْرَاو وِسْر (فَاوَسْرِي) 2090 اَمِّي اِنزَاوِي سَرَسْرَاو (فَاوَسْرِي) نَاعِمَاوَسْرِي 2090 اَمِّي

فیر 19:7 اِنزَاوِي سَر اِنزَاوِي سَرَسْرَاو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو، اِنزَاوِي سَرَسْرَاو دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو سَرَسْرَاو.

اِنزَاوِي سَرَسْرَاو (اِنزَاوِي) 721 اَمِّي اِنزَاوِي، اِنزَاوِي سَرَسْرَاو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو (اِنزَاوِي) 1135 اَمِّي وِسْر اِنزَاوِي سَرَسْرَاو فَاوَسْرَو.

• نَاعِمَاوَسْرِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو (اَوَسْرِي اِنزَاوِي سَرَسْرَاو وِسْر) فَاوَسْرَو اِنزَاوِي
➔ نَاعِمَاوَسْرِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو فَاوَسْرَو نَاعِمَاوَسْرِي اَو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو فَاوَسْرَو
➔ نَاعِمَاوَسْرِي زَسْرَو سَرَسْرَاو جَرَسْرَاوِي هَجَّ اِنزَاوِي سَرَسْرَاو فَاوَسْرَو
اِنزَاوِي هَجَّ (فیر 11:2) 782

• نَاعِمَاوَسْرِي فَوَسْرَو

781 اِنزَاوِي... فیر 4:8

اَللّٰهُ 2962 اَمِّي اَللّٰهُ 2316 اَمِّي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو 3841 اَمِّي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو نَاعِمَاوَسْرِي نَاعِمَاوَسْرِي اَو (اِنزَاوِي سَرَسْرَاو) 3068 اَمِّي،
" دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو (سَرَسْرَاو) اِنزَاوِي سَرَسْرَاو،

هَجَّ اَللّٰهُ، اِنزَاوِي دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو (اِنزَاوِي) 721 اَمِّي اَللّٰهُ، نَاعِمَاوَسْرِي... نَاعِمَاوَسْرِي اَو (5:19)، اِنزَاوِي سَرَسْرَاو اِنزَاوِي سَرَسْرَاو
دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو (سَرَسْرَاو) دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي اَو (سَرَسْرَاو) نَاعِمَاوَسْرِي

782 هَجَّ سَرَسْرَاو [2-21] سَوَعِي اِنزَاوِي اِنزَاوِي & دَوَعْمَسَدَاوَسْرِي فَاوَسْر " اِنزَاوِي نَاعِمَاوَسْرِي

788 قیام 43. "تجزیہ دہشتاد و نہ سو پندرہ سو" و تفسیر لادوسری تجزیہ لادوسرے. www.thehemaofthelord.com/uncategorized/43 تجزیہ لادوسرے لادوسرے۔
تجزیہ لادوسرے

(1) 1 وَسْر) حَسْرُوَعْمَرِ، قَرَى سَرَعَاثَرِ كَرِمَرِ عَرِ اَرِزْزَسْرَى قَرَا نَسْرَ اَلْاَرِزْزَوْرَاج (فَیْرَ 19:20).
→ عَمْرَى سَرِ (زَسْرَ لَیْ سَعْمَرِ، اَرِیْ سَرِ، اَرِیْرَ سَعْمَرِ سَرِ) اَسْرَقَرِ اَرِیْ 1000 اَرِیْرَ (فَیْرَ 20:2)، قَرَسْرَ سَعْمَرِ سَرِ یَوْرَ
حَسْرَ قَرَا نَسْرَ 1000 اَرِیْرَ زَوْرَ سَرِ (فَیْرَ 20:7).

(2) سَعْمَرِ سَرِ كَرِمَرِ عَرِ سَرِ اَرِزْزَسْرَى سَعْرَا سَرِ عَمْرَا سَرِ اَلْاَرِزْزَسْرِ (فَیْرَ 20:10).

(3) وَیْ سَرِیْ لَیْ قَرِمَرِ اَلْاَرِیْرِ قَرِمَرِ قَرِ (زَیْرَ زَیْرَ 12:29) اَرِیْ. زَكَرَا زَسْرَى، وَیْ سَرِیْ اَسْرَقَرِ یَمِرَ اَلْاَرِیْرِ اَلْاَرِیْرِ زَسْرِ سَرِیْرَ
اَرِیْ اَلْاَرِیْرِ قَرِ قَرِمَرِ اَلْاَرِیْرِ قَرِیْرَ (عَمْرَ 16:10 یَا قَرِ، اَرِیْرَ سَرِیْرَ 12:14-15) حَسْرُوَعْمَرِ سَرِیْرَ سَرِیْرَ قَرِیْرَ سَرِیْرَ یَوْرَ
اَرِیْرَ اَلْاَرِیْرِ اَلْاَرِیْرِ اَلْاَرِیْرِ (فَیْرَ 20:13 اَرِیْرَ) اَرِیْرَ 1000 اَرِیْرِ قَرِمَرِ اَلْاَرِیْرِ اَلْاَرِیْرِ (فَیْرَ 20:8).

(4) اَرِیْرَیْ قَرِیْرَ یَوْرَ سَرِیْرَ اَرِیْرَ اَلْاَرِیْرِ سَرِیْرَ اَلْاَرِیْرِ (فَیْرَ 20:15).
→ زَعْمَرِ اَلْاَرِیْرِ (عَمْرَ سَرِیْرَ لَیْ) اَرِیْرَ 20:13 اَرِیْرَ لَیْ سَرِیْرَ اَلْاَرِیْرِ قَرِیْرَ، قَرِیْرَ زَعْمَرِ.

Woman – Under the law & a servant of the rudiments of the world

Gal 4:1 Now I say, **Threat their hair** ^{Gal 4:18} as long as he is a child ^{Gal 4:18} differeth nothing from a servant ^{Gal 4:18} though he be **lord** ^{Gal 4:2} But is under tutors and governors until the time appointed of the father.
Gal 4:3 Even so we, when we were children ^{Gal 4:3} were in bondage (become servant) ^{Gal 4:3} under (of) ^{Gal 4:3} the elements (rudiments) ^{Gal 4:7} of the world.
→ Although the heir is the lord (kyrios) of all (heavenly things), the heir of a child is the same as a servant who is under tutors and governors until the time appointed of the father.
→ You were servants of the rudiments of the world when you were children.

The covenants (testaments) – The freewoman by promise vs. The bondswoman in bondage

Gal 4:22 For it is written, that Abraham had two sons, the one by a bondmaid, the other by (of) ^{Gal 4:22} promise.
Gal 4:24 Which things are an allegory: for these are the **two covenants (testaments)** ^{Gal 4:24}; the one from the mount Sinai, which gendereth to bondage ^{Gal 4:24}; which is Agar.
Gal 4:25 For this Agar is mount Sinai in Arabia, and answereth to **Jerusalem** which now is, and is in bondage with her children ^{Gal 4:25}; Gal 4:26 But **Jerusalem** which is above is free, which is **the mother of us all**.
Gal 4:27 For it is written, Rejoice, thou barren that bearest not; break forth and cry, thou that travailest not; for **the desolate** ^{Gal 4:27} hath many more children ^{Gal 4:27} than she which hath **an husband** ^{Gal 4:28}.
Now we, brethren, as **Isaac** was, are **the children** ^{Gal 4:28} of **promise**.
→ There are two covenants (testaments) for Abraham's two sons, one of whom was born in earthly Jerusalem after the flesh of a bondswoman (Ishmael) and the other by promise of a freewoman in heavenly Jerusalem (Isaac).
(Video 7, "The generations of Adam to Abraham + Woman" and video 24, "You are the Holy Jerusalem")

The word of promise (Rom 9: 6 For this is the word of promise. At this time will come, and Sara shall have a son.) is given to Israel. Who is Israel then?

Rom 9:6 Not as though the word of God hath taken no effect. For they are **not all Israel**, which are of Israel.
Rom 9:7 Neither, because they are the **seed** ^{Rom 9:7} of Abraham, are they all children ^{Rom 9:7} but, in Isaac shall thy seed ^{Rom 9:7} be called.
Rom 9:8 That is, They which are the children ^{Rom 9:8} of the flesh, these are not the children ^{Rom 9:8} of God; but the children ^{Rom 9:8} of the promise are counted for the seed.
Gal 3:16 Now to Abraham and his seed were the promises made. He saith not, And to seeds, as of many; but as of **one**. And to thy seed, which is **Christ**.
(Luk 2:11 For unto you is born **primogenitus** ^{Luk 2:11}; this day in the city of David a **Saviour**, which is **Christ the Lord**.)

→ To the woman who have conceived Abraham's seed, the word (logos) of promise (Rom 9:8) which is the Son of man, submit yourselves unto your own man (husband) who is of the freewoman, born by promise *the Gentile nations of 107*.
→ Through the logos of promise you conceived, you woman, will bring forth **Christ the Lord**, which is the theme of God (video 24, "The house of God (You are the Holy Jerusalem)" and video 16, "All nations (From the Jews to the Gentile nations of 107).

The woman should be subject to her own man

1Co 11:7 For a man ^{1Co 11:7} as the head of the church, **forasmuch as he is the image and glory of God**; but the woman is the glory of the man.
Eph 5:22 Wives ^{Eph 5:22} submit yourselves unto your own husbands ^{Eph 5:22} as unto the Lord ^{Eph 5:22}.
Eph 5:23 For the husband ^{Eph 5:23} is the head of the church, and he is the **saviour** ^{Eph 5:23} of the body.
Eph 5:24 Therefore as the church is subject unto Christ, so let the wives ^{Eph 5:24} be to their own husbands ^{Eph 5:24} in every thing.
→ Because a man (husband) is the image and glory of God, he is the head of the church, even as Christ is the head of the church (those who conceived the theme and the logos of God) are subject unto Christ, the woman (those who conceived the logos of God) should be subject to her own man (the one who conceived the theme of God) in everything.

Spiritually, woman becomes a son

Gal 4:4 But when the fulness of the time was come, God sent forth his **Son**, made of a woman ^{Gal 4:4} made under the law.
(Rom 1:3 Concerning his **Son Jesus Christ our Lord**, which was made of the seed (semen) ^{Rom 1:3} of David according to the flesh.)
Gal 4:5 To **redeem** them that were under the law, that we might receive the adoption of sons. ^{Gal 4:5} And because ye are sons, ^{Gal 4:5} God hath sent forth the spirit of His Son into your hearts, crying, **Abba, Father**.
Gal 4:7 Wherefore thou art no more a servant, but a son, and if a son, then **the heir of God through Christ**.
→ But when the fulness of time came, God sent His Son Jesus Christ our Lord, made of the seed of David according to the flesh, to redeem those who were under the law by adopting them.
→ Through adoption, God has sent the Spirit of His Son into your hearts, allowing you to cry "Abba, Father, allowing you to cry Abba, Father. You are no longer a servant, but a son, the heir of God through Christ.
→ Spiritually, a woman becomes a son and must remain holy until the days are fulfilled (for details about how the woman becomes son and why the sons of Israel must remain holy until the days be fulfilled (Num 6:5) in order to become perfect in Christ Jesus, refer to "The Hair of the Head")

Man – Under grace

(Mat 1:19) Then Joseph her husband, being a just (righteous) ^{Mat 1:19} man, ^{Mat 1:19} 2Co 5:21 For the hath made him (Christ) to be sin for us, who knew no sin; that we might be made the righteousness of God in him (Christ).
→ A man ^{Gal 4:9} of Christ is one who is made righteousness of God in Christ (2Co 5:21) and thus has the seed of Christ and is holy ^{Gal 4:9} (Mar 6:20).

Eph 5:25 Husbands, ^{Eph 5:25} love your wives, ^{Eph 5:25} even as Christ also loved the church, and gave himself for it. Eph 5:26 That he might sanctify and cleanse it with the washing of water by the word, ^{Eph 5:26}

→ Therefore, you man of Christ, love your woman (wife) who has the logos of God being under tutors and governors until the time appointed of the Father, even as Christ also loved the church and gave himself for it.
→ Christ will sanctify and cleanse the church with the washing of water by the word (the theme) ^{Eph 5:26} in order to present it to Himself a glorious church, not having spot, or wrinkle, but be holy without blemish.

Men – to love their wives

Eph 5:28 So ought men ^{Eph 5:28} to love their wives ^{Eph 5:28} as their own bodies. He that loveth his wife loveth himself.
Eph 5:29 For no man ever yet hated his own flesh, but nourisheth and cherisheth it, even as the Lord ^{Eph 5:29} the church.
Rom 6:9 Knowing that, Christ ^{Rom 6:9} died unto sin once, but in that he liveth, he liveth unto God. Rom 6:11 Likewise reckon ye also yourselves to be dead indeed unto sin, but alive unto God through Jesus Christ our Lord.
Rom 6:10 For in that he died, he died unto sin once, but in that he liveth, he liveth unto God. Rom 6:11 Likewise reckon ye also yourselves to be dead indeed unto sin, but alive unto God through Jesus Christ our Lord.
Rom 6:12 Let not sin therefore reign in your mortal body, that ye should obey it in the lusts thereof.
Rom 6:13 Neither yield ye your members as instruments of unrighteousness unto sin; but yield yourselves unto God, as those that are alive from the dead, and your members as instruments of righteousness unto God.
Rom 6:14 For sin shall not have dominion over you; for ye are not under the law, but under grace.
→ Man under grace must love the woman who is under the law as his own body as well as his own flesh, which he nourished and cherished in order to grow it into the theme of God (refer to "The Hair of the Head" for details).
→ Know that Christ was raised from the dead, so that death no longer has dominion over him, and that Christ died once for sin and was raised from the dead to live for God. Likewise, you are dead to sin and alive to God through Jesus Christ our Lord.
→ Know that you are members of the body of Christ, and that your members as instruments of righteousness unto God.
→ Sin no longer has dominion over you because you are no longer under the law, but under grace. Therefore, those who are under grace must nourish and cherish those who are under the law, just as the Lord does for the church (man and woman).
→ We are members of the body of Christ, of his flesh, and of his bones (Eph 5:29)

(A great mystery) Christ & the Church 2/2

One flesh (Man cleaved unto his Woman) – The body of Christ or the church

Gen 2:24 Therefore shall a man leave his father and his mother, and shall cleave unto his wife, and they shall be one flesh.
 → In Gen 2:24, "man (husband)" refers to the souls of the flesh who is able to conceive life by faith to become righteous and holy, and the woman is to join the body (bone and flesh) of man in the flesh.

Eph 5:30 For we are members of his body, of his flesh, and of his bones.
 → In Eph 5:31, "man" refers to the man of flesh of bondwoman who has the logos of God through the Son of man, and thus he is to leave his father and mother to join into his freewoman (which is life in Christ) in order to join the body (bone and flesh) of the Lord in the spirit.

Eph 5:31, "man" refers to the man of flesh of bondwoman who has the logos of God through the Son of man, and thus he is to leave his father and mother to join into his freewoman (which is life in Christ) in order to join the body (bone and flesh) of the Lord in the spirit.

A great mystery) Christ and the Church
 Eph 5:32 This is a great mystery, but I speak concerning Christ and the church.
 → A great mystery of Christ and the church
 → Refer to "The Hair of the Head (Explanation #2)" for details.

Woman → Man → Christ → God (1Co. 11:3)
 • the head of Christ is God
 • the head of every man (husband) is Christ
 • the head of the woman is the man (husband)

2Co 11:2 For I (Paul) have espoused you to one husband, that I may present you as a chaste virgin to Christ

Head
 The image and glory of God
 • Pray or Prophecy

Man (husband)
 The head of the woman

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

Head
 The glory of the man (husband)
 • Pray or Prophecy

Woman
 The glory of the woman

Head
 The day of the Lord

2Pe 3:12 Looking for and hastening into the coming of the day of God, wherein the heavens being on fire shall be dissolved, and the elements (the rudiments) shall melt (become liquid) with fervent heat?

2Pe 3:13 Nevertheless we, according to his promise, look for new heavens and a new earth (ground), wherein dwelleth righteousness.

Job 42:5 (Refer to "All things are of God" for details)

I (Job) have heard of thee (the LORD) by the hearing of the ear, but now mine eye seeth thee (the LORD).

1Co 11:4 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:5 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:6 Thus, husbands, men under grace, must love your woman (wife) who has the logos of God under tutors and governors until the time appointed of the Father, even as Christ also loved the church and gave himself for it.

2Pe 3:3 Knowing this first, that there shall come in the last days scoffers, walking after their own lusts, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:4 And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:5 For this they willingly are ignorant of that by the word (the logos) of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in/by the water.

1Co 11:4 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:5 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:6 Thus, husbands, men under grace, must love your woman (wife) who has the logos of God under tutors and governors until the time appointed of the Father, even as Christ also loved the church and gave himself for it.

2Pe 3:3 Knowing this first, that there shall come in the last days scoffers, walking after their own lusts, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:4 And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:5 For this they willingly are ignorant of that by the word (the logos) of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in/by the water.

1Co 11:4 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:5 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:6 Thus, husbands, men under grace, must love your woman (wife) who has the logos of God under tutors and governors until the time appointed of the Father, even as Christ also loved the church and gave himself for it.

2Pe 3:3 Knowing this first, that there shall come in the last days scoffers, walking after their own lusts, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:4 And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:5 For this they willingly are ignorant of that by the word (the logos) of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in/by the water.

1Co 11:4 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:5 Every man praying or prophesying, having his head covered, dishonoureth his head, forasmuch as he is the image and glory of God; but the woman is the glory of the man.

1Co 11:6 Thus, husbands, men under grace, must love your woman (wife) who has the logos of God under tutors and governors until the time appointed of the Father, even as Christ also loved the church and gave himself for it.

2Pe 3:3 Knowing this first, that there shall come in the last days scoffers, walking after their own lusts, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:4 And saying, Where is the promise of his coming? for since the fathers fell asleep, all things continue as they were from the beginning of the creation.

2Pe 3:5 For this they willingly are ignorant of that by the word (the logos) of God the heavens were of old, and the earth standing out of the water and in/by the water.

- עֵץ סֵדֶיךָ, רָחֵם לִי אֱלֹהִים
 - 12 יָמִים יָצִיא עֵץ סֵדֶיךָ לְיָמֵי 12 דְּלִילֵי לַיְלָה לְיָמֵי 12 & אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ.
 - אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ תִּמְצָא לְיָמֵי 12 יָמֵי שְׁנָה בְּמִצְרָיִם.
 - אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ, אִם תִּמְצָא, תִּמְצָא לְיָמֵי 3 עֵץ רֵעֶךָ.
 - דָּרְשׁוּ רֵעֶיךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 (פֶּסַח 16-21:15) רָחֵם לִי אֱלֹהִים (רָחֵם לִי אֱלֹהִים רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ).

פֶּסַח 21:15 אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 סֵדֶיךָ, אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
פֶּסַח 21:16 אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

- ☞ פֶּסַח 21:15 nda אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 - ☞ פֶּסַח 21:16 nda סֵדֶיךָ, אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
- אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

→ מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

- רָחֵם לִי אֱלֹהִים
 - 1 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 - תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 - אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

• תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

- וְשָׁרָה אֵשֶׁת אַבְרָהָם אָמְרָה לְאַבְרָהָם אֵלֹהִים אֲנִי וְאַבְרָהָם אֲנִי וְאַבְרָהָם אֲנִי וְאַבְרָהָם אֲנִי.
 → תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.
 רָחֵם לִי אֱלֹהִים (רָחֵם לִי אֱלֹהִים רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ).
 רָחֵם לִי אֱלֹהִים (רָחֵם לִי אֱלֹהִים רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ).

1 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

1 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

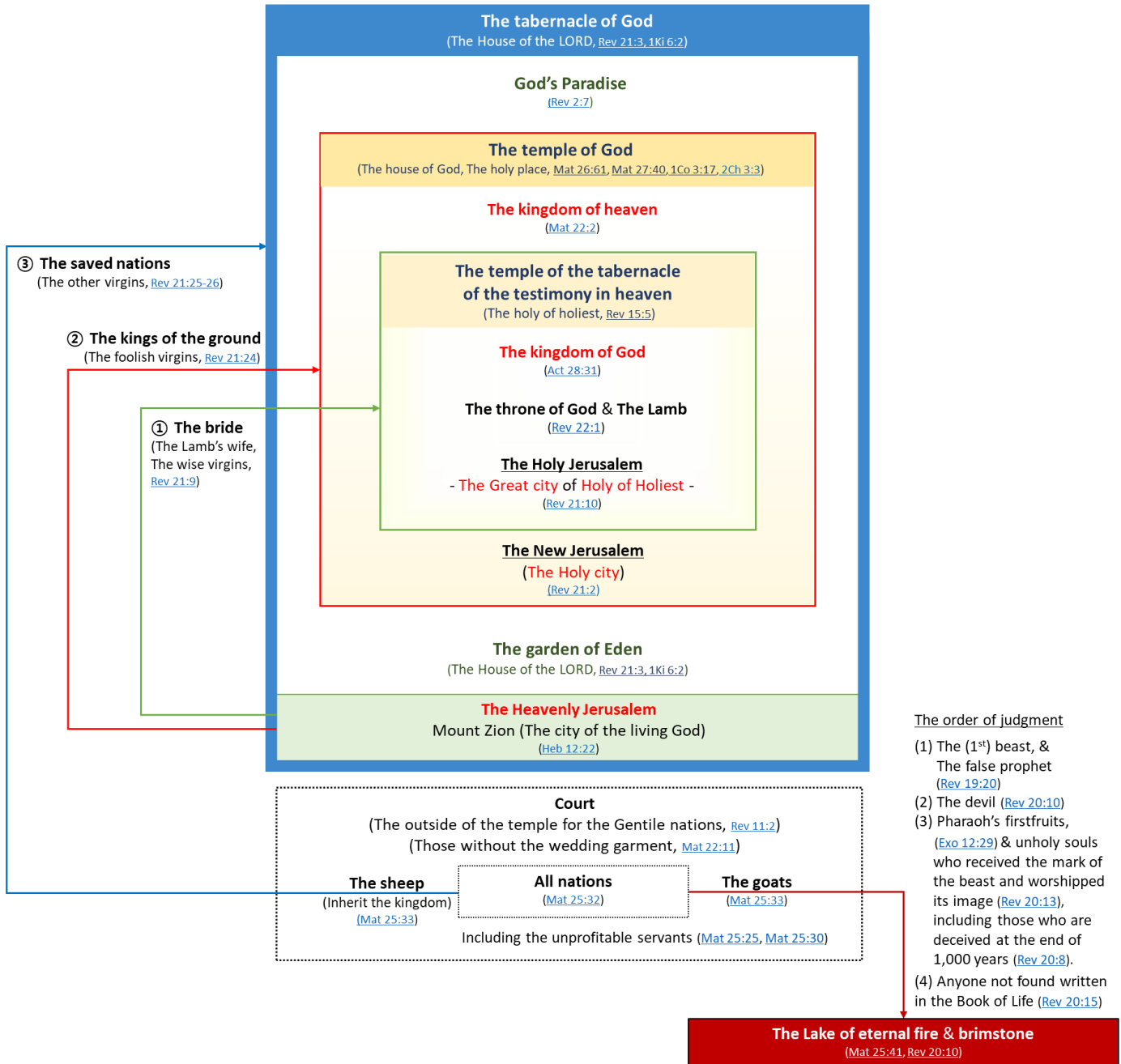
אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

⁸⁹⁹ מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.

"4712 - סֵדֶיךָ - סֵדֶיךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ". Apr, 2023 25.

<https://www.blueletterbible.org/lexicon/q4712/kjv/tr/0-1>

⁹⁰⁰ אִם תִּמְצָא רֵעֶךָ לְיָמֵי 12 מִצְרָיִם לְיָמֵי 12 שְׁנָה לְיָמֵי 12 רֵעֶךָ.



[ئەسزۇمۇزى دۇنىغا] ئىمىرىسۇغى بىدەر (ئىسزۇمۇزى، زىمىر ئىزۇمۇزى) 965

965 16. ئىسزۇمۇزى، زىمىر ئىزۇمۇزى. "www.therhemaofthelord.com/ئىسزۇمۇزى/16".

The Gentiles (The mystery of Christ)

Separated into the gospel of God (Rom.11)

